जनवरी 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

"यदि आपकी पत्नी हो तो पत्नी के साथ,
समाधानपूर्वक व्यवहार रखना।
आपको और उन्हें, दोनों का समाधान
हो ऐसा व्यवहार रखना।
उन्हें असमाधान हो और आपको
समाधान रहे, तो ऐसा व्यवहार बंद कर देना।
और आपसे (आपकी)
स्त्री को कोई दुःख नहीं होना चाहिए।"

अडालज : दिवाली और नये साल का महोत्सव : ता. 12 और 14 नवम्बर 2023

परम पूज्य दादा भगवान का 116वाँ जन्म जयंति महोत्सव : अमरेली : ता. 22 से 26 नवम्बर 2023

वर्ष : 19 अंक : 3
अखंड क्रमांक : 219
जनवरी 2024
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2024
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

विषय के सामने विवाहितों का समझ रूपी पुरुषार्थ

संपादकीय

ज्ञानी पुरुष दादाश्री की कृपा से आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद, ज्ञान की सर्वोच्च अनुभव कक्षा तक पहुँचने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। लेकिन 'ब्रह्मचर्य' शब्द सुनते ही कई गृहस्थ महात्माओं को ऐसा लगता है कि हमारे जीवन में यह असंभव है। ब्रह्मचर्य संबंधी ऊँची बात ब्रह्मचारियों के लिए ही हैं। परंतु यह 'अक्रम विज्ञान', एक ऐसा अद्‌भुत विज्ञान है कि जो मोक्षमार्ग में विवाहितों को भी 'एडमिट' करता (स्वीकारता) है। खुद के निज स्वरूप की अज्ञानता से संसार में बंधन हुआ है और स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो संसार की कोई भी चीज़ या कोई भी व्यक्ति बंधनकारक है ही नहीं। परम पूज्य दादाश्री ने खुद भी गृहस्थ वेष में, इस अपवाद को सिद्ध कर दिखाया है।

प्रस्तुत संकलन में, महात्माओं को उदय में आते, डिस्चार्ज विकारी भावों और विषय में सुख की मान्यता संबंधी प्रश्नों जो प्रेक्टिकली उलझन में डालते हैं, वे जैसे हैं वैसे व्यक्त हुए हैं। उनके छेदन के लिए परम पूज्य दादाश्री की ब्रह्मचर्य संबंधी ज्ञानवाणी यहाँ संकलित हुई हैं। जिसमें विविध समझ स्टेप बाय स्टेप मिलती हैं, जैसे कि विषय का वास्तविक स्वरूप, उसके सामने थ्री विज़न, विषय भीख की लाचारी, विषय की परवशता, डबल बेड प्रथा की विकृतता, विषय वहीं क्लेश और बैर, बुख़ार आए तब दवाई लेना, हक के विषय का समभाव से *निकाल* वगैरह। जिससे अक्रम विज्ञान में विषय-विकार को दबाने, कंट्रोल करने की बात ही नहीं है लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से विषय-विकार उत्पन्न होने का जो मूल कारण है, उससे संबंधित सर्व अज्ञान दूर किया जाए तो विषय के परिणाम धीरे-धीरे खत्म हो जाते हैं।

इस काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना कठिन माना जाता है, फिर भी प्रकट ज्ञानी पुरुष दादा भगवान खुद ब्रह्मचर्य में रहकर हज़ारों को बरता सकें हैं। विवाहितों को भी ऐसी श्रेणियाँ समझाई हैं कि बाहर के परिणाम में बदलाव किए बगैर अंदर की समझ में ऐसे बदलाव करते जाओ कि धीरे-धीरे, स्टेप बाय स्टेप बाहर सहज ही बदलाव आए। अब, ऐसे कलियुग में अक्रम विज्ञान द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञानी की समझ लेकर विवाहित भी ब्रह्मचर्य का मार्ग पूरा क्यों नहीं कर पाएँ?

अनंत बार विषय के कीचड़ में अल्पसुख के लालच से फँस गया, विकृत हुआ और ग़र्क हुआ, फिर भी अक्रम विज्ञान समझ में आते ही भाव ब्रह्मचर्य के निश्चय की शुरूआत होती है। वह इस कलियुग का एक आश्चर्य है न! जो महात्मा वास्तव में इस कीचड़ में से बाहर निकलना चाहते हैं, उन्हें अब हिम्मत रहेगी कि अक्रम विज्ञान द्वारा विवाहितों के लिए भी ब्रह्मचर्य संभव है। ज्ञानी पुरुष की विज्ञानमय वाणी से विषय के स्वरूप के सामने जागृति रहे और उत्पन्न होने वाले विषय के सामने खेद रहे और ब्रह्मचर्य की समझ के साथ वैज्ञानिक दृष्टि से पुरुषार्थ शुरू कर सकें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

विषय के सामने विवाहितों का समझ रूपी पुरुषार्थ

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अक्रम मार्ग में ब्रह्मचर्य का स्थान कितना?

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान मिलने के बाद, दादा का ज्ञान मिलने के बाद ब्रह्मचर्य की आवश्यकता रहती है या नहीं?

दादाश्री : ब्रह्मचर्य की आवश्यकता तो जो पालन कर सके, उसके लिए है और जो पालन नहीं कर सके, उसके लिए नहीं है। यदि आवश्यक ही होता तब तो ब्रह्मचर्य-पालन नहीं करने वालों को सारी रात नींद ही नहीं आती, कि अब तो हमारा मोक्ष चला जाएगा। अब्रह्मचर्य गलत है, ऐसा जान ले तो भी बहुत हो गया।

ऐसा है न, इस बात का स्पष्टीकरण आज कर दिया। ब्रह्मचर्य और अब्रह्मचर्य में से आवश्यक क्या है? उसका रूट कॉज़ क्या है? वह किसी को पता नहीं चल सके, ऐसी चीज़ है। यानी यह रूट कॉज़ मैंने आपको बता दिया। यह जो रूट कॉज़ है, वह मौलिक है।

प्रश्नकर्ता : बौद्धिक विषयों की रमणता तो रहेगी ही न?

दादाश्री : हम स्त्री से संबंधित रमणता का विरोध करते हैं। एक तरफ अब्रह्मचर्य चल रहा हो और दूसरी तरफ ज्ञानी पुरुष को भले ही कितना भी देह समर्पित किया हो, लेकिन यदि स्त्री के देह के प्रति राग है तो इसका मतलब खुद के देह पर भी उतना ही राग है, अत: अर्पणता उतनी कच्ची ही रहेगी। मदर, फादर, भाई, बहन के प्रति जो राग है उसे हम राग नहीं कहते। क्योंकि उस राग में उतना तन्मयाकार नहीं होता। जबकि स्त्री विषय में तो इतना अधिक तन्मयाकार हो जाता है, यानी अंदर इतना अधिक खो जाता है कि उसे हिलाने पर भी पता नहीं चलता।

बाकी, वास्तविक ब्रह्मचर्य अर्थात् आत्मचर्या में ही अपना उपयोग और *पुद्गल* विषयचर्या में उपयोग नहीं। यानी सिर्फ आत्मरमणता, *पुद्गल* रमणता नहीं। अन्य *पुद्गल* रमणता उतनी बाधक नहीं है लेकिन विषय से संबंधित *पुद्गल* रमणता तो अंत में आत्मा का अनुभव भी नहीं करने देता।

प्रश्नकर्ता : फिलॉसफर ऐसा कहते हैं कि सेक्स को दबाने से विकृत हो जाते हैं। स्वास्थ्य के लिए सेक्स ज़रूरी है।

दादाश्री : उनकी बात सही है, लेकिन अज्ञानी को सेक्स की ज़रूरत है। वर्ना शरीर को आघात लगेगा। जो ब्रह्मचर्य की बात को समझते हैं, उन्हें सेक्स की ज़रूरत नहीं हैं और अज्ञानी व्यक्ति को यदि ब्रह्मचर्य के लिए बाध्य किया जाए तो उसका शरीर टूट जाएगा, खत्म हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जिसे समकित प्राप्त नहीं हुआ है, वह भी ब्रह्मचर्य का महत्व समझता हो तो उसे परेशानी नहीं आएगी न?

दादाश्री : ब्रह्मचर्य का महत्व वह ज्ञानी के सिवा या शास्त्र के आधार के सिवा समझ ही नहीं सकता।

है कुदरती, पर लिमिट में चाहिए

प्रश्नकर्ता : तो ये सभी साधु जो ब्रह्मचर्य पालन करते हैं, वह?

दादाश्री : वहाँ उन्हें शास्त्र का आधार है। कोई भी आधार होना चाहिए। इसलिए ये बाहर वाले लोग यदि ऐसा करने जाएँ, दबाने से तो विकृत हो जाएगा। ब्रह्मचर्य हितकारी है-वह कैसे, किस दृष्टि से, वह पूर्ण रूप से समझ लेना पड़ेगा। उसका अर्थ यह नहीं है कि उसे दबाना है। वर्ना स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा और कुछ नहीं लेकिन स्वास्थ्य पूरी तरह से खत्म हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : सेक्स नहीं दबाना चाहिए, वर्ना रोग हो जाता है।

दादाश्री : रोग हो जाता है, यह बात सही है। उसे ऐसे नहीं दबाना है। राज़ी-खुशी से उपवास करने में हर्ज नहीं है, भूख को दबाने में हर्ज है। हठाग्रह करने में हर्ज है।

प्रश्नकर्ता : तो अब्रह्मचर्य भी नेचर (कुदरत) के कानून के विरुद्ध है न?

दादाश्री : अब्रह्मचर्य नेचर के विरुद्ध नहीं है। अब्रह्मचर्य में नोर्मेलिटी होनी चाहिए फिर। अब्रह्मचर्य में नोर्मेलिटी चूकने के बाद नेचर के विरुद्ध कहा जाएगा। अब्रह्मचर्य की नोर्मेलिटी किसे कहेंगे? एक पत्नीव्रत होना चाहिए। फिर उसका अनुपात क्या होना चाहिए कि महीने में आठ दिन या फिर चार दिन, वह उसका अनुपात। फिर आपको तुरंत ही फल मिलेगा। नेचर आपका विरोध नहीं करेगी।

प्रश्नकर्ता : नेचर के विरुद्ध जाने का उदाहरण दीजिए न?

दादाश्री : ये हम जो रसभरे आम खाते हैं, वह नैचुरल (कुदरती) है, लेकिन यदि ज़्यादा मात्रा में खा लें तो वह अन्नैचुरल (अकुदरती) है। नहीं खाओ तो वह भी अन्नैचुरल है! अनुपात से ज़्यादा खाओ तो वह सब पॉइज़न (जहर) है। वह अनुपात सही मात्रा में होना चाहिए। नेचर अनुपात को सही मात्रा में रखना चाहती है।

प्रश्नकर्ता : पशुओं को तो कुदरती हेल्प (मदद) है न?

दादाश्री : नहीं, उन पर नियंत्रण कुदरती ही है। उनकी खुद की सत्ता है ही नहीं। यह तो लोगों को ऐसा कुछ भान नहीं है। इन कलियुग के मनुष्यों से तो ये जानवर अच्छे हैं कि नियम में रहते हैं। कलियुग के मनुष्यों को तो नियम ही नहीं हैं न!

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्यों हुआ कि जानवर नियम में हैं और मनुष्य नियम में नहीं हैं?

दादाश्री : जानवरों में तो कुदरती है न! इसलिए नियम में ही होते हैं। सिर्फ ये मनुष्य ही बुद्धिशाली हैं! इसलिए इन्होंने ही यह सारी खोजबीन की है। फिर इत्र लगाते हैं, सुगंधी लेकर दुर्गंध को टालते हैं। लेकिन ऐसे तो कहीं दुर्गंध जाती होगी? ये जानवर भी दुष्चारित्र वाले नहीं होते। जानवर भी चारित्र वाले होते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे?

दादाश्री : जानवरों में तो किसी खास सीज़न में ही विषय होता है और इन मनुष्यों में तो सीज़न-वीज़न का कोई ठिकाना ही नहीं है।

मनुष्य तो जानवरों से भी गए-गुज़रे हैं। जानवरों में तो कोई अवगुण है ही नहीं। सभी अवगुणों का भंडार हो तो वह है, ये मनुष्य! चारित्र मुख्य चीज़ है। चारित्र के आधार पर तो मनुष्य भी देवता कहलाते हैं। लोग कहते हैं न, कि ये देवता जैसे व्यक्ति हैं।

प्रश्नकर्ता : मनुष्यों में यह विषय तो कुदरती अवस्था है न?

दादाश्री : लेकिन उसमें हम ऐसा कर सकते हैं कि कुदरती अवस्था में भी उसकी कोई लिमिट होती है! इसलिए हम यदि चाहें तो उतना पुरुषार्थ कर सकते हैं। आत्मा, वह पुरुष हुआ और पुरुषार्थ करे तो परिवर्तन ला सकता है, वह हल निकाल सकता है! खाने बैठे इसका मतलब क्या यह है कि खाते ही रहो?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बिल्कुल भी नहीं।

दादाश्री : आप (चंदूभाई के) साथ रहते हो, लेकिन आप कहना कि, 'चंदूभाई क्या-क्या लेंगे?' तब वह कहे, 'सब्ज़ी, रोटी और थोड़ा सा चावल।' इस पर आप कहें, 'नहीं। आज ये तीन लो न। आज दादाजी के पास सत्संग में जाना है न!' ऐसा करके, समझा-बुझाकर काम लेना। वे फिर वैसे ही लेंगे, उन्हें ऐसा कुछ नहीं है! उन्हें तो कहने वाला चाहिए। सलाह देने वाला चाहिए। और आपको हर्ज भी क्या है? कौन सा नुकसान है? कब नहीं खाया होगा? जब से दुनिया में आए तभी से खा ही रहे हो न! और यह क्या नया शुरू किया है कुछ?

ब्रह्मचर्य, खुद के प्रोजेक्ट का परिणाम

प्रश्नकर्ता : कुदरत को यदि स्त्री-पुरुष की ज़रूरत नहीं है, तो वह क्यों दिया?

दादाश्री : स्त्री-पुरुष वह कुदरती है और ब्रह्मचर्य का हिसाब वह भी कुदरती है।

प्रश्नकर्ता : तो ब्रह्मचर्य नेचर के विरुद्ध हुआ न?

दादाश्री : हाँ, ब्रह्मचर्य तो नेचर के विरुद्ध ही है न!

प्रश्नकर्ता : तो फिर जगत् में ब्रह्मचर्यव्रत लिया जाता है, दिया जाता है, वह किसलिए?

दादाश्री : वह तो, पूर्वभव में जो भाव किए थे, उसका फल है।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे पता चलेगा कि हमने पूर्व में भाव किए हैं?

दादाश्री : ऐसा तो शायद ही कोई व्यक्ति होगा, करोड़ों में एकाध कोई होगा ज़्यादा होते नहीं हैं न! इन साधु-महाराजों को किसलिए वैराग्य आता होगा?

प्रश्नकर्ता : पूर्वभव में भाव किया होगा इसलिए।

दादाश्री : यानी हम क्या कहना चाहते हैं कि ज़बरदस्ती ब्रह्मचर्य पालन मत करना। ब्रह्मचर्य की भावना करना। ब्रह्मचर्य तो भावना का फल है। बाकी, ये साधु जो ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह भावना के फल स्वरूप है। उसमें उनकी जागृति है, ऐसा नहीं माना जाएगा। लेकिन आखिर में जागृति की ज़रूरत तो पड़ेगी। जाग्रत हुए बगैर नहीं चलेगा। जागृति तो, ज्ञानी पुरुषों ने पूर्व में भावना नहीं की हो, फिर भी अब्रह्मचर्य के सागर में वे खुद ब्रह्मचर्य रख सकते हैं, वह जागृति कहलाती है। अग्नि में हाथ डालना है और जलना नहीं है, ज्ञानी पुरुष का ब्रह्मचर्य उस जैसा कहलाता है।

मनुष्य जिस तरह से जीना चाहे, वह खुद जैसी भावना करता है, उसी भावना के फल स्वरूप यह जगत् है। ब्रह्मचर्य की भावना पिछले जन्म में की होगी तो इस जन्म में ब्रह्मचर्य का उदय आएगा। यह जगत् (खुद का ही) प्रोजेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अभी भी मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही है कि मनुष्य को ब्रह्मचर्य पालन क्यों करना चाहिए?

दादाश्री : उसे लेट गो करो आप। (आपको ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करना हो तो) ब्रह्मचर्य का पालन मत करना। मैं कुछ ऐसे मत का नहीं हूँ। मैं तो लोगों से कहता हूँ कि शादी कर लो। कोई शादी करे तो उसमें मुझे हर्ज नहीं है।

ऐसा है, जिसे सांसारिक सुखों की ज़रूरत है, भौतिक सुखों की जिसे इच्छा है, उसे शादी करनी चाहिए। सबकुछ करना चाहिए और जिसे भौतिक सुख अच्छे ही नहीं लगते और सनातन सुख चाहिए, उसे नहीं।

प्रश्नकर्ता : 'ब्रह्मचर्य पालन करना ही नहीं है' ऐसा मेरा चैलेन्ज नहीं है, लेकिन उस बात की समझ नहीं है।

दादाश्री : ठीक है, बात सही है। आपका चैलेन्ज नहीं है, वह बात सच है! और चैलेन्ज दिया जा सके, ऐसा है भी नहीं। क्योंकि इस दुनिया में किसी ने किस तरह के भाव किए हैं, उसने क्या प्रोजेक्ट किया है, वह क्या हम बता सकते हैं?। किसी ने पूरी ज़िंदगी भक्ति का ही प्रोजेक्ट किया होगा तो पूरी ज़िंदगी भक्ति ही करता रहेगा। किसी ने दान देने का ही प्रोजेक्ट किया होगा तो दान देता रहेगा। किसी ने ऑब्लाइज़िंग नेचर का किया हो तो ऑब्लाइज़ करता रहेगा। कोई विकारी नेचर का हो, वह खुद की स्त्री का सुख भोगता है लेकिन अन्य कई लड़कियों का गलत फायदा उठाता है। वे सब भले ही कैसे भी लोग हों लेकिन जैसा प्रोजेक्ट किया होगा, वैसा यह फल मिला है। उसके कड़वे फल मिलते हैं, तो भुगतने नर्कगति में जाना पड़ता है।

ज्ञान रूपी नाव पहुँचाए निर्विकारी किनारे

प्रश्नकर्ता : 'अक्रम मार्ग' में विकारों को हटाने का साधन कौन सा है?

दादाश्री : यहाँ विकारों को हटाना नहीं है। यह मार्ग अलग है। कुछ लोग यहाँ मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य (व्रत) लेते हैं और कुछ पत्नी वाले होते हैं, उन्हें हमने जो रास्ता बताया होता है, उस तरह उसका हल लाते हैं। यानी 'यहाँ' विकारी पद है ही नहीं, पद ही 'यहाँ' निर्विकारी है न! विषय, वे विष हैं, वे संपूर्णत: विष नहीं हैं। विषय में निडरता, वह विष है। विषय तो मजबूरन, जैसे पुलिस वाला पकड़कर करवाए और करे, उस तरह का हो तो उसमें हर्ज नहीं। खुद की स्वतंत्र मर्ज़ी से नहीं होना चाहिए। पुलिस वाला पकड़कर जेल में बिठाए तो आपको बैठना ही पड़ेगा न! वहाँ कोई चारा है? यानी कर्म उसे पकड़ता है और कर्म ही उसे पटकता है, उसके लिए मना नहीं कर सकते न! बाकी जहाँ विषय की बात भी हो, वहाँ पर धर्म नहीं है। धर्म निर्विकार में होता है। भले ही कितने ही कम अंश का धर्म हो, लेकिन धर्म निर्विकारी होना चाहिए।

विकार से ही संसार खड़ा हुआ है। यह पूरा संसार यानी विषयों का विकार, इन पाँच इन्द्रियों के विषयों के विकार हैं और मोक्ष यानी

निर्विकार, आत्मा निर्विकार है। वहाँ राग भी नहीं है और द्वेष भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : बात सही है, लेकिन उस विकारी किनारे से निर्विकारी किनारे तक पहुँचने के लिए कोई तो नाव होनी चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, उसके लिए ज्ञान है। उसके लिए वैसे गुरु मिलने चाहिए। गुरु विकारी नहीं होने चाहिए।

जब तक ज़रा सा भी विकारी संबंध वाला हो न, तब तक वह दुनिया में किसी को नहीं सुधार सकता। विकारी स्वभाव ही आत्मघाती स्वभाव है। अभी तक किसी ने सिखाया नहीं कुछ भी?

प्रश्नकर्ता : क्या घर में रहकर मन के विकार छूट सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, सबकुछ छूट ही जाता है न! घर में रहकर तो क्या, कहीं भी रहकर छूट सकता है, यदि 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाएँ तो। 'ज्ञानी पुरुष' के मिलने पर भी यदि विकार नहीं छूटें तो वे ज्ञानी हैं ही नहीं। आप ज्ञानी से कहना, कि 'आप कैसे मिले हमें कि हमें यह विकार उत्पन्न हुए?' लेकिन लोग विनयी हैं न, इसलिए ऐसा नहीं कहते बेचारे। अंदर-अंदर परेशान होते रहते हैं, फिर भी नहीं कहते।

नहीं जाना जगत् ने, स्वरूप वासना का

प्रश्नकर्ता : कामवासना का सुख क्षणिक है, ऐसा जानने के बावजूद भी कभी-कभार उसकी प्रबल इच्छा होने का कारण क्या है? और उस पर कैसे अंकुश लगाया जा सकता है?

दादाश्री : कामवासना का स्वरूप जगत् ने जाना ही नहीं। कामवासना उत्पन्न क्यों होती है, यदि यह जान ले तो उसे काबू में लाया जा सकता है। लेकिन वस्तुस्थिति में वह कहाँ से उत्पन्न होती है, यह जानता ही नहीं। फिर काबू में कैसे ला सकता है? कोई काबू में नहीं ला सकता। जिसका ऐसा दिखता है, कि काबू में कर लिया है, वह तो पूर्व की भावना का फल है। बाकी कामवासना का स्वरूप कहाँ से उत्पन्न हुआ, उस उत्पन्न दशा को जान ले और वहीं पर ताला लगा दिया जाए तभी उसे काबू में ला सकते हैं। इसके सिवा भले ही वह ताला लगाए या कुछ और करे फिर भी उसका कुछ चलेगा नहीं। काम-वासना नहीं करनी हो तो हम रास्ता दिखाएँगे।

अभिप्राय बदलने पर विषय बंद

प्रश्नकर्ता : लेकिन मानसशास्त्री कहते हैं कि विषय बंद हो ही नहीं सकता, अंत तक रहता है। तो फिर वीर्य का ऊर्ध्वगमन होगा ही नहीं न?

दादाश्री : मैं क्या कहता हूँ कि विषय के प्रति अभिप्राय बदल जाए तो फिर विषय रहेगा ही नहीं! जब तक अभिप्राय नहीं बदलेगा, तब तक वीर्य का ऊर्ध्वगमन होगा ही नहीं। अपने यहाँ तो सीधा आत्मा में ही डाल देना है, वही ऊर्ध्वगमन है! विषय बंद करने से उसे आत्मा का सुख बर्तता है और विषय बंद हो जाए तो वीर्य का ऊर्ध्वगमन होता ही है। हमारी आज्ञा ही ऐसी है कि विषय बंद हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : आज्ञा में क्या होता है? स्थूल बंद करना?

दादाश्री : स्थूल के लिए हम कुछ कहते

ही नहीं। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार ब्रह्मचर्य में रहें, ऐसा होना चाहिए। और यदि मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, ब्रह्मचर्य के पक्ष में आ गए तो स्थूल (ब्रह्मचर्य) तो अपने आप आ ही जाएगा। तेरे मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार को पलट। हमारी आज्ञा ऐसी है कि ये चारों पलट ही जाते हैं।

अज्ञान की गलतियों की सज़ा इन्द्रियों को

प्रश्नकर्ता : ये जो इन्द्रियाँ हैं, वे भोगे बिना शांत नहीं होती, तो इसके अलावा और कोई उपाय है?

दादाश्री : ऐसा कुछ भी नहीं है। बेचारी इन्द्रियाँ तो अंत तक भोग भोगती ही रहती हैं। उनमें जब तक सत्व रहे, तब तक, जीभ में अगर बरकत हो न तब उस पर हम कोई भी चीज़ रखें कि तुरंत उसका स्वाद हमें बता देगी। और बड़ी उम्र हो जाए और जीभ में बरकत नहीं रहे तो नहीं बताती। आँखों में बरकत हो तो सभी, कोई भी चीज़ हो तो बता देती है। बुढ़ापे की वजह से अगर बरकत ज़रा कम हो गई हो, तो नहीं बता सकती। अत: उम्र होने पर बेचारी इन्द्रियाँ तो अपने आप ही फीकी पड़ जाती हैं। लेकिन ये विषय फीके नहीं पड़ते। ये इन्द्रियाँ विषयी नहीं हैं।

विषय इन इन्द्रियों का दोष नहीं है। इन्द्रियों को बिना वजह सज़ा देते हैं लोग। इन्द्रियों को, शरीर को सज़ा देते हैं न, सभी? वे भैंसे की भूल पर चरवाहे को मारते हैं। भूल भैंसे की और मारते हैं चरवाहे को। अरे, बिना वजह भूखा मारते हैं। उनका क्यों नाम देता है तू? सीधा रह न! तेरा टेढ़ा है अंदर, नीयत चोर है और उस पर भी ज्ञानी नहीं मिले हैं। ज्ञानी मिल जाएँ तो सीधे रास्ते पर ले जाएँगे, देर ही नहीं लगेगी।

प्रश्नकर्ता : विषयों में से निकलने के लिए ज्ञान महत्वपूर्ण चीज़ है।

दादाश्री : सभी विषयों से छूटने के लिए ज्ञान ही ज़रूरी है। अज्ञान से ही विषय चिपके हुए हैं। कितने ही ताले लगाएँ, फिर भी विषय बंद नहीं होते। इन्द्रियों को ताला लगाने वाले मैंने देखे हैं, लेकिन विषय कहीं ऐसे बंद नहीं होते। ज्ञान से सब चला जाता है।

मन को नहीं, मन के कॉज़ेज़ को रोकना है

प्रश्नकर्ता : मन को जब विषय भोगने की हम छूट देते हैं, तब वह नीरस रहता है और जब हम उसे विषय भोगने के लिए कंट्रोल करते हैं, तब वह ज़्यादा उछलता है, आकर्षण रहता है, तो उसका क्या कारण है?

दादाश्री : ऐसा है न, इसे मन का कंट्रोल नहीं कहते। जो अपने कंट्रोल को नहीं स्वीकारे, वह कंट्रोल है ही नहीं। कंट्रोलर होना चाहिए न? खुद यदि कंट्रोलर होगा तो कंट्रोल को स्वीकार करेगा। खुद कंट्रोलर है ही नहीं, इसलिए मन नहीं मानता। मन आपकी सुनता नहीं है न?

मन को रोकना नहीं है, मन के कॉज़ेज़ को रोकना है। मन तो खुद एक परिणाम है। वह परिणाम बताए बगैर नहीं रहेगा। परीक्षा का वह रिज़ल्ट है। परिणाम नहीं बदलेगा, परीक्षा बदलनी है। जिससे वह परिणाम उत्पन्न होता है, उन कारणों को बंद करना है। तब वह कैसे पकड़ में आएगा? किस वजह से उत्पन्न हुआ है मन? तब कहते हैं, विषय में चिपका हुआ है। 'कहाँ चिपका है' वह ढूँढ निकालना चाहिए और फिर वहाँ पर काटना है।

प्रश्नकर्ता : उन विषयों में जाने से मन को कैसे रोकें?

दादाश्री : विषयों में जाने से रोकना नहीं है। जिन विषयों को मन खड़ा करता है, वही मन फिर पकड़ पकड़ता है। उन विषयों को हमें जहाँ तहाँ से धीरे धीरे कम करना चाहिए। यानी उसके कॉज़ेज़ बंद करने चाहिए।

हम पड़ोसी से कहें कि 'भाई, आप हमारे साथ झगड़ा मत करना। हमारे साथ तकरार मत करना', फिर भी तकरार होती रहती हो तो हम नहीं समझ जाएँगे कि गलती कुछ और ही है। समझ जाएँगे या नहीं? तब पूछते हैं, 'कौन सी गलती?' तब कहते हैं, 'यह झगड़ा नहीं हो ऐसे कारण खड़े करो'। यानी वह झगड़ा तो होगा ही कुछ दिनों तक, लेकिन झगड़ा नहीं होने के कारणों का जब सेवन होगा, तब फिर वैसे परिणाम आएँगे। झगड़े के कारणों का सेवन करें और झगड़ा बंद कर सकें, क्या ऐसा हो सकता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं हो सकता।

दादाश्री : अत: उसके कारण बंद करने पड़ेंगे। मैंने कहा है न, कि मन-वचन-काया वे इफेक्टिव चीज़ें हैं। उनके कॉज़ेज़ बंद करो।

प्रश्नकर्ता : कारण बंद करना यानी? ऐसा नहीं हो, ऐसे भाव करना, यही न?

दादाश्री : हमें कारण बंद करना है, यानी कल अगर पुलिस वाले ने अपना नाम लिख लिया हो। बगैर लाइट वाली साइकल पर जा रहे हों और नाम लिख ले तो दूसरे दिन हम कॉज़ेज़ बंद कर लेंगे या नहीं? कि भई, आज तो लाइट लगाओ। तो क्या फिर वह नाम लिखेगा? वह कारण बंद हो गया न? उसी तरह ये कॉज़ेज़ बंद करने हैं। सबकुछ सीखा जा सकता है, सिर्फ 'चाय' की आदत पड़ गई है, झंझट इतनी ही है। लाओ, ज़रा 'चाय' पी लेते हैं। अंदर अकुलाएगा, उस समय चाय पीने की ज़रूरत नहीं है। सोचने की ज़रूरत है, जबकि वहाँ पर चाय पी लेता है। जहाँ सोचने का स्कोप मिले दिमाग़ उलझ जाए तब कहेगा, 'चाय पीनी चाहिए'। अरे भाई, अभी तो सोचने की ज़रूरत है। चाय अभी रहने दे, सुबह पीना। कॉज़ेज़ बंद करेंगे तो हो सकेगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : समझ में आया।

दादाश्री : एक बार किसी के साथ हमने अविनय किया हो, कि दूर हट यहाँ से। और वह गाली दे दे, तो दूसरी बार हम ऐसा नहीं करेंगे न?

प्रश्नकर्ता : नहीं करेंगे।

दादाश्री : वह तो बंद नहीं होगा। आप यह रास्ता बदल लो, वह कहलाता है ज्ञान। उसे बंद करने का प्रयत्न करना, वही भ्रांति कहलाती है। भ्रांति हमेशा इफेक्ट को ही तोड़ने जाती है। जबकि ज्ञान कॉज़ेज़ को बंद करने जाता है।

दाद खुजलाए, ऐसा सुख

प्रश्नकर्ता : दादा, सच बताऊँ तो मुझे अभी भी, कभी-कभी विषय में स्वाद आ जाता है।

दादाश्री : वह स्वाद तुझे छोड़ नहीं रहा है? लेकिन इसमें स्वाद जैसा है ही कहाँ? निरी गंदगी! इस गंदगी को चूसने जाएँ तो भी उसमें इतनी दुर्गंध है, ओहोहो! इतनी दुर्गंध है! कितनी दुर्गंध होगी? अपार दुर्गंध है! कृपालुदेव ने क्या लिखा है तूने पढ़ा है? उन्होंने उसका ऐसा वर्णन किया है कि हमें घिन आ जाए।

प्रश्नकर्ता : फिर भी इस इन्द्रिय को उसमें स्वाद आ जाता है न?

दादाश्री : कोई स्वाद नहीं आता। वह स्वाद तो दाद हो गया हो और खुजलाए, ऐसा स्वाद आता है! उसे खुजला रहा हो तब हम कहें कि 'अब बंद करो'। फिर भी उसका ऐसा स्वाद आता है कि वह छोड़ता नहीं है। फिर जलन होती है, तब फिर बुरा लगता है। जलन तो होगी ही न? कृपालुदेव ने इस सुख की तुलना दाद खुजलाने पर होने वाले सुख के साथ की है। मनुष्य जब विषय करे, उस घड़ी उसका फोटो खींचें तो कैसा दिखेगा?

प्रश्नकर्ता : गधे जैसा!

दादाश्री : ऐसा! क्या बात कर रहा है? ऐसा इन मनुष्यों को शोभा देता है क्या?

विषय में सुख कैसे?

विचारशील मनुष्य विषय में सुख कैसे मान बैठा है, उसी पर मुझे आश्चर्य होता है! विषय का पृथक्करण करे तो दाद को खुजलाने जैसा है। हमें तो बहुत विचार आते हैं और लगता है कि अरेरे! अनंत जन्मों से यही किया! जितना हमें पसंद नहीं है, वह सबकुछ विषय में है। निरी दुर्गंध है! आँखों को देखना अच्छा नहीं लगता। नाक को सूंघना अच्छा नहीं लगता। तूने सूंघकर देखा था? सूंघकर देखना था न? तो वैराग तो आ जाता। कान को नहीं रुचता। सिर्फ चमड़ी को रुचता है। लोग तो पैकिंग को देखते हैं, माल को नहीं देखते। जो चीज़ पसंद नहीं है, पैकिंग में तो वही चीज़ें भरी हुई हैं। निरी दुर्गंध का बोरा है! लेकिन मोह के कारण भान नहीं रहता और इसीलिए तो पूरा जगत् चकरा गया है।

यह बांद्रा स्टेशन की जो खाड़ी आती है, उसकी दुर्गंध पसंद है? उससे भी बुरी दुर्गंध इस पैकिंग में हैं। आँखों को पसंद नहीं आएँ, ऐसे चित्र-विचित्र पार्ट्स अंदर है। इस बोरे में तो बेहद विचित्र गंदगी है! यह अपने अंदर जो हृदय है, उसी लौंदे को निकालकर हाथ में दे दे तो? और कहे कि अपने साथ हाथ में रखकर सो जा, तो? नींद ही नहीं आएगी न! यह तो समुद्र के विचित्र जीव जैसा दिखता है। जो पसंद नहीं है, वह सभी कुछ इस देह में है। ये आँखें यों बहुत सुंदर दिखती हों, लेकिन मोतियाबिंद हो जाए और उन सफेद आँखों को देखा हो तो? अच्छा नहीं लगेगा। ओहोहो! सब से ज़्यादा दु:ख इसी (इस शरीर) में हैं। यह शराब जो नशा चढ़ाती है, उस शराब की दुर्गंध मनुष्य को अच्छी नहीं लगती और यह विषय तो सर्व दुर्गंध का कारण है। सभी नापसंद चीज़ें वहाँ पर है। अब क्या होगा यह आश्चर्य? इसमें से छूट गए तो फिर राजा। जिसे भूख ही नहीं लगी हो उसे क्या? जो भूखा होगा वही होटल में जाएगा न? जहाँ-तहाँ झाँकता रहेगा, लेकिन जिसने खाना खाया है, खाकर आराम से टहल रहा है, रस-रोटी खाकर टहल रहा है, वह क्यों होटल में जाएगा? गंदगी वाली होटलें! विषय के बारे में गहराई से सोचने पर यही लगता है कि यह गटर तो खोलने जैसा है ही नहीं। कितना सारा बंधन! यह जगत् इसीलिए खड़ा है न!

पूरी दुनिया की है वह जूठन

बाकी, विषय भोग तो निरी जूठन ही है, पूरी दुनिया की जूठन है। आत्मा का कहीं ऐसा आहार होता होगा? आत्मा को बाहर की किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, निरालंब है। किसी भी अवलंबन की उसे ज़रूरत नहीं है। परमात्मा ही है खुद। निरालंब अनुभव में आ जाए तो परमात्मा ही हो गया! उसे कुछ भी नहीं छू

सकता। दीवारों के आरपार निकल जाए, अंदर ऐसा आत्मा है, अनंत सुख का धाम है!

इस पैकिंग का हमें क्या करना है? पैकिंग तो कल को सड़ जाएगा, गिर जाएगा, बिगड़ जाएगा, पैकिंग तो किस चीज़ से बना है? यह हम नहीं जानते? फिर भी लोग भूल जाते हैं न? भूल नहीं जाते लोग? लेकिन यह पैकिंग आपको भी भ्रम में डाल दे। हमें, ज्ञानी पुरुष को, यों आरपार दिखता है। कपड़े वगैरह हों फिर भी कपड़ों के अंदर, चमड़ी के अंदर जैसा है वैसा यथावत् दिखता है। फिर राग कैसे होगा? खुद सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं और बाकी सब तो कचरा है, सड़ा हुआ माल है। उसमें देखने जैसा क्या है? वहीं पर राग होता है, वही आश्चर्य है न! खुद क्या यह नहीं जानता? जानता है सबकुछ, लेकिन उसे ऐसा समझाया नहीं गया है। ज्ञानियों ने पहले से ही माल देखा हुआ है। इसमें नया क्या है? और फिर बीवी के साथ सो जाता है। अरे, इस मांस को ही दबाकर सो जाता है! लेकिन भान नहीं है न! उसी का नाम मोह है न! हमें निरंतर जागृति रहती है, एवरी सेकन्ड जागृति रहती है, इसलिए हम जानते हैं कि निरा मांस ही है यह सब।

अब ऐसी बात कोई करता नहीं है न! क्योंकि लोगों को विषय पसंद है। इसलिए यह बात करता ही नहीं है न कोई! जो निर्विषयी है, वही यह बात कर सकते हैं, वर्ना ऐसा खुल्लम खुल्ला कौन कहेगा? अंत में तो यह सब छोड़े बिना चारा ही नहीं है। आप हम से कहो कि मुझे ब्रह्मचर्यव्रत लेना है। तो हम 'हाँ' कहते हैं। क्यों, कि भई, बहुत अच्छा है। सच्चा सुखी होने का मार्ग यही है, यदि आपका उदय हो तो। वर्ना शादी कर लो। शादी करके अनुभव लो। एक बार अनुभव हो गया तो फिर दूसरे जन्म में मुक्त हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कोई-कोई मुक्त हो जाता है, नहीं तो छूटना मुश्किल है।

दादाश्री : उस अनुभव को याद रखे तो छूट सकता है। हम तो हर क्षण याद रखने वाले।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो शायद ही कोई याद रखने वाला होगा, नहीं तो कीचड़ में उतरता ही जाता है।

दादाश्री : हाँ, यह तो कीचड़ ही है। गहरा कीचड़ है। उसमें उतरता ही जाता है। रिसर्च तो, जो निर्विषयी हो, वही कर सकता है। विषयी मनुष्य रिसर्च कर ही नहीं सकता।

जाँचो विषय का पृथक्करण

एक भाई को वैराग्य नहीं आ रहा था। इसलिए मैंने उसे 'श्री विज़न' दिया। फिर 'श्री विज़न' से उसने देखा, तो उसे बहुत वैराग्य आ गया। तुझे ऐसे देखना पड़ता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा उपयोग देना पड़ता है।

दादाश्री : ऐसा? यानी अभी मोह है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अभी भी ऐसे कभी मोह सवार हो जाता है। मान लो बीवी अच्छे कपड़े पहनकर ऐसे चले तो फिर अंदर मूर्छा उत्पन्न हो जाती है।

दादाश्री : ऐसा? तब वह जापानीज़ पुतले को अच्छे कपड़े पहनाते हैं, वहाँ क्यों मोह नहीं होता? स्त्री की मृतदेह हो और उसे अच्छे कपड़े पहनाए जाएँ तो मोह होगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं होगा।

दादाश्री : क्यों नहीं होगा? तो इन सभी को किस पर मोह होता है? स्त्री है, कपड़े अच्छे पहने हैं, लेकिन मुर्दा हो और अंदर आत्मा नहीं हो तो, उस पर मोह होगा? तो मोह किस पर होता है? यह सोचा नहीं है न? जिस में आत्मा नहीं हो, ऐसी स्त्री पर मोह करता है कोई?

प्रश्नकर्ता : नहीं करता।

दादाश्री : तो इसका क्या कारण है? तो वह क्या आत्मा से मोह करता है? तेरी जो बीवी है न, उस पर पिछले जन्म की तेरी दृष्टि चिपक गई थी, उसका यह फल आया है।

प्रश्नकर्ता : मेरा विचार ब्रह्मचर्य लेने का है और उसका ऐसा विचार नहीं है, इसलिए वह ऐसी बिगड़ी है न!

दादाश्री : वही परवशता है न! कितनी अधिक परवशता!

प्रश्नकर्ता : और उसे तो बल्कि आश्चर्य होता है कि आपको मेरे प्रति आकर्षण क्यों नहीं होता?

दादाश्री : उससे ऐसा कहना कि तू जब संडास में जाती है, फिर भी बाहर रहकर मुझे दिखाई देता है, इसलिए आकर्षण नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : तब तो वह भड़क जाएगी।

दादाश्री : नहीं, लेकिन उसे समझ में आ जाएगा कि संडास में जाए, ऐसा दिखाई दे तो आकर्षण होगा ही कैसे? वह कैसा खराब दिखेगा! लेकिन यह भी बम फटने जैसा ही हो जाता है न! तब तो यों भी फँसाव हो गया न! लक्कड़ का लड्डू जिसने खाया, वह भी पछताया, नहीं खाया, वह भी पछताया।

विकारी संबंध तब तक लड़ाई-झगड़े

यह तो, वैराग्य ही नहीं आता! अरे, यह विषय प्रिय है या तुझे ये गालियाँ प्रिय हैं? मुझे तो कभी किसी ने एक गाली दी हो, तो फिर मैं तो उसके साथ संबंध ही कट कर दूँ, फिर बाहरी संबंध रखूँ लेकिन आंतरिक संबंध कट! क्या यह जन्म गालियाँ सुनने के लिए है?

आपको यदि घर में रोज़-रोज़ के लड़ाई-झगड़े पसंद नहीं हों, तो फिर उसके साथ विकारी संबंध ही बंद कर देना, पाशवता बंद कर देना। विषय तो भयंकर पाशवता है। इसलिए यह पाशवता बंद कर देना। जो बुद्धिमान और समझदार होगा, वह नहीं सोचेगा? फोटो खींचे तो कैसा दिखेगा? फिर भी शर्म नहीं आती? मैंने ऐसा कहा, तब ऐसा सोचेंगे, वर्ना ऐसा कहाँ से सोचेंगे? जब तक आपका विकारी संबंध है, तब तक ये लड़ाई-झगड़े रहेंगे ही। इसलिए हम आपके लड़ाई-झगड़ों के बीच पड़ते ही नहीं। हम जानते हैं कि जब विकार बंद हो जाएँगे, तब उसके साथ झगड़े बंद हो ही जाएँगे। एक बार उसके साथ विकार बंद कर दिया न, फिर तो यह (पति) उसे मारे तो भी वह कुछ नहीं बोलेगी। क्योंकि वह जानती है कि अब मेरी हालत खराब हो जाएगी! यानी अपनी भूल से ही यह सब हो रहा है। अपनी भूल के कारण ही ये सारे दुःख हैं। वीतराग कितने समझदार! भगवान महावीर तो तीस साल की उम्र में ही (घर से) अलग होकर मस्ती में घूमते थे!

उसके साथ विषय बंद करने के अलावा अन्य कोई उपाय ही नहीं है। इस दुनिया में किसी को इसके अलावा दूसरा कोई उपाय मिला ही नहीं है। क्योंकि इस जगत् में राग-द्वेष का

मूल कारण ही यह है, मौलिक कारण ही यह है। यहीं से सारा राग-द्वेष पैदा हुआ है। सारा संसार यहीं से शुरू हुआ है। अत: यदि संसार बंद करना हो तो यहीं से बंद करना पड़ेगा। फिर भले ही आम खाओ, जो अच्छा लगे वह खाओ न! बारह रुपये दर्जन वाले आम खाओ न, कोई पूछने वाला नहीं है। क्योंकि आम आपके विरुद्ध दावा नहीं करेंगे। आप उन्हें नहीं खाओगे तो, वे कोई कलह नहीं करेंगे जबकि स्त्री-पुरुष के संबंध में तो यदि आप कहो कि 'मुझे नहीं चाहिए' तब वह कहेगी कि, 'नहीं, मुझे तो चाहिए ही'। वह कहे कि 'मुझे सिनेमा देखने जाना है', तब अगर आप नहीं जाओगे तो कलह! जान पर बन आई समझो! क्योंकि सामने मिश्रचेतन है और वह क़रार वाला है इसलिए दावा करेगी!

स्थूल क्लेश का मूल - विषय

प्रश्नकर्ता : मैंने कई अच्छे महात्मा देखे हैं, जो बड़ी-बड़ी ज्ञान की बातें करते हैं, लेकिन उनका स्थूल क्लेश नहीं जाता। सूक्ष्म क्लेश तो शायद हो भी सही, वह नहीं जाता लेकिन स्थूल क्लेश अपने से क्यों नहीं जा सकता?

दादाश्री : ऐसा। इन सबका मूल है विषय। और दुनिया में सबसे बड़ा फँसाव कोई हो, तो वह विषय है और उसमें कुछ भी सुख नहीं है, भला! सुख कुछ भी नहीं और उसकी वजह से झगड़े बेहिसाब होते हैं! घर में लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? दोनों विषयी होते हैं, जानवर जैसे विषयी होते हैं, फिर सारा दिन टकराव होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आता कि क्लेश और विषय साथ में कैसे हो सकते हैं? झगड़ा और विषय, दोनों का मेल कैसे बैठेगा? वह मेरे दिमाग़ में नहीं बैठता। मारपीट तक का क्लेश और विषय, उन दोनों का मेल बैठेगा? क्या मनुष्य तब अंधा हो जाता होगा?

दादाश्री : अरे! आमने-सामने मारते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन जब विषय के परमाणु खड़े होते हैं, तब क्या अंधा हो जाता होगा? उसे अंदर से याद नहीं आता होगा कि हम मारपीट कर रहे थे?

दादाश्री : मारपीट करें न, तभी तो उन्हें विषय का मज़ा आता है! फिर स्वमान जैसा कुछ भी नहीं। पत्नी पति को थप्पड़ मारती है तो पति पत्नी को थप्पड़ मारता है। फिर पति हमसे आकर कह जाता है कि मेरी पत्नी मुझे मारती है! तब मैं कहता भी हूँ कि, अरे! तुझे तो ऐसी मिली! फिर तो तेरा कल्याण हो जाएगा!

प्रश्नकर्ता : यह सब फज़ीता सुनते ही यों हैरान हो जाते हैं कि ये लोग कैसे जीते होंगे?

दादाश्री : फिर भी जी रहे हैं न। तूने दुनिया देखी न! और जीएँ नहीं तो क्या करें? मर थोड़े ही सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें यह सब देखकर कँपकँपी छूट जाती है। फिर ऐसा होता है कि हर रोज़ ऐसे झगड़े चलते रहते हैं फिर भी पति-पत्नी को इसका हल लाने का मन नहीं होता, यह भी आश्चर्य है न।

दादाश्री : ये तो, कई बरसों से, जब से शादी की तभी से ऐसा ही चल रहा है। शादी की तभी से एक ओर झगड़े भी जारी हैं और एक ओर विषय भी जारी है। इसीलिए तो हमने कहा कि आप दोनों ब्रह्मचर्यव्रत ले लो, तो लाइफ

उत्तम हो जाएगी। अत: ये सब लड़ाई-झगड़े वे अपनी गरज़ के मारे करते हैं। पत्नी जानती है कि ये आखिर कहाँ जाएँगे। पति भी जानता है कि यह कहाँ जाएगी। ऐसे आमने-सामने गरज़ की वजह से चल रहा है।

विषय से डलते हैं अनंतकाल के बैर बीज

हमें यहाँ एक ही चीज़ करनी है कि बैर नहीं बढ़े और बैर बढ़ाने का मुख्य कारखाना कौन सा है? यह स्त्रीविषय और पुरुषविषय!

प्रश्नकर्ता : उसमें बैर कैसे बंधता है? अनंतकाल के लिए बैर बीज पड़ता हैं, वह कैसे?

दादाश्री : ऐसा है न, कि कोई मृत पुरुष या मृत स्त्री हो और ऐसा मान लो कि उसमें कोई दवाई भरकर और पुरुष, पुरुष जैसा ही रहे और स्त्री, स्त्री जैसी ही रहे तो हर्ज नहीं है, उसके साथ बैर नहीं बंधेगा। क्योंकि वह जीवित नहीं है। जबकि यह तो जीवित है, यहाँ बैर बंधता है।

प्रश्नकर्ता : वह क्यों बंधता है?

दादाश्री : अभिप्राय में 'डिफरेन्स' है इसलिए। आप कहो कि, 'मुझे अभी सिनेमा देखने जाना है'। तब वह कहेगी कि, 'नहीं, आज तो मुझे नाटक देखने जाना है'। यानी टाइमिंग मेल नहीं खाता।

विषय की भीख माँगी जाती होगी?

स्त्रियाँ पति को धमकाकर रखती हैं, उसका क्या कारण है? पुरुष ज़्यादा विषयी होते हैं इसीलिए धमाकाकर रखती है। ये स्त्रियाँ खाना खिलाती हैं इसलिए धमाकाकर नहीं रखती, विषय के कारण धमाकाकर रखती हैं! यदि पुरुष विषयी नहीं होगा, तो कोई स्त्री धमाकाकर नहीं रखेगी। कमज़ोरी का ही फ़ायदा उठाती हैं लेकिन यदि कमज़ोरी नहीं होगी तो स्त्री कुछ भी नहीं करेगी। स्त्री जाति बहुत कपट वाली है और पुरुष भोले! अत: आपको दो-दो, चार-चार महीनों के लिए कंट्रोल रखना पड़ेगा, तो फिर वे अपने आप थक जाएगी। तब फिर उनका कंट्रोल नहीं रहेगा।

स्त्री जाति कब वश में होती है? पुरुष यदि विषय में बहुत सेन्सिटिव (चंचल) हों, तो वह पुरुष को वश में कर लेती है। लेकिन यदि आप विषयी हों, लेकिन उसमें सेन्सिटिव नहीं हो जाओ तो वह वश में हो जाएगी। यदि वह 'खाने के लिए' बुलाए और आप कहो कि अभी नहीं, दो-तीन दिन के बाद, तो वह आपके वश में रहेगी। वर्ना आप वश में हो जाओगे। यह बात मैं पंद्रह साल की उम्र में ही समझ गया था। कुछ लोग तो विषय की भीख माँगते हैं कि, 'बस आज के दिन।' अरे, विषय की भीख माँगनी चाहिए? फिर तेरी क्या दशा होगी? स्त्री क्या करती है? अंकुश में ले लेती है। सिनेमा देखने गए तो कहेगी, 'बच्चे को उठा लो'। अपने महात्माओं में विषय है, लेकिन विषय की भीख नहीं होती। विषय और विषय की भीख, ये दोनों चीज़ें अलग हैं। जहाँ मान, कीर्ति और विषयों की भीख नहीं होती, वहाँ भगवान रहते हैं।

यदि विषय में बहुत सेन्टिमेन्टल नहीं हो तो छूट जाएगा। विषय की भीख नहीं माँगनी चाहिए। कुछ लोग तो विषय की भीख माँगते हैं। अरे, पाँव भी छूते हैं! कुछ तो मुझे आकर ऐसा भी कह गए हैं कि, 'मेरी स्त्री विषय के लिए मना करती है, तो अब मैं क्या करूँ?' मैंने कहा कि, 'माँ कहना, तो फिर हाँ कर देगी'! अरे घनचक्कर, तुझे शर्म नहीं आती? मना करे तो

क्या उसे 'माँ' कहेगा? तो जाने दे, 'नहीं चाहिए मुझे', कहना। यह तो खुद माँग करता रहता है फिर स्त्री धमकाती ही रहेगी न। और वह मना करे, वह तो बल्कि अच्छा है। 'भला हुआ छूटी जंजाल।' एक बार उसने मना किया तो आप जीत गए। फिर वह माँगे तो उसका 'दावा' सुनना ही मत। फिर कहना, 'तूने मना किया इसलिए मैंने बंद कर दिया है, ताला ही लगा दिया है और ताले को चाबी लगा दी'। लेकिन भाई खुद ढीला होता है, तो क्या हो सकता है?

अभी तो मुझे कितने ही महात्मा आकर बता जाते हैं कि, 'मुझसे आजिज़ी करवाती है'। तब मैंने कहा, 'भाई, तेरा रूआब चला गया तो क्या करवाएगी फिर? समझ न अभी, अभी योगी बन जा न!' अब इनको कैसे पार पाएँ? इस दुनिया को क्या पार पा सकते हैं?

एक स्त्री अपने पति से चार बार साष्टांग करवाती है, तब एक बार छूने देती है। तब भाई, इसके बजाय समाधि ले ले तो क्या बुरा है? समुद्र में समाधि ले तो सीधे समुद्र तो है, झंझट तो नहीं! इसके लिए चार बार साष्टांग!

ऐसा सुना ही नहीं है। इसमें गलती हुई है, इतना भी नहीं जानते। यह जो भीख माँग रहे हैं, वह भूल हुई है, इतना भी मालूम नहीं है।

एक व्यक्ति तो मुझसे फरियाद करने आया मुंबई में और कहने लगा कि पाँच बार फाइल नंबर दो के पाँव छूए, तब जाकर मुझे संतुष्ट किया। भाई, कैसा व्यक्ति है तू, अरे जानवर है क्या? क्या देखकर मुझे बताने आया तू! विषय की भीख माँगी जाती होगी? आपको क्या लगता है? अरे भाई, पाँच बार! अब मुझे सीधा बताने आया, इसलिए मुझे डाँटना पड़ा। फिर मुझसे कहने लगा कि, 'अब रास्ता बताइए'। तब मैंने कहा, 'अब यह छूट जाएगा, उसके बाद रास्ता बताया जा सकता है'! उल्टा चलेगा तो फिर क्या होगा?

अरे, विषय की भीख माँगते हो! कैसे व्यक्ति हो? जानवर से भी बदतर! विषय की भीख माँगी जाती होगी? खाने की भीख नहीं माँगते, भूख लगी हो तो क्या भीख माँगते हैं? कुछ शूरवीरता तो होनी चाहिए या नहीं? अब इतना अधिक असंयम कैसे पुसाए? आप नहीं समझे, मैंने जो बात कही वह?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ गया।

दादाश्री : माँगते समय इस तरह नमस्कार भी करता है। अरे, ऐसी कैसी है तेरी माँग! और फिर पति कहता है, मैं पति हूँ! अरे भाई, पति ऐसा होता होगा? आपको अनुचित नहीं लगता? यह उचित बात है? मनुष्य को शोभा देता है क्या? यानी थोड़ा बहुत संयम होना चाहिए, सभी कुछ होना चाहिए।

मनुष्य को संयमी रहना ही चाहिए। संयम से तो मनुष्य की शोभा है।

आपको यह बाउन्ड्री बता देता हूँ। किसी भी चीज़ के लिए याचकता नहीं होनी चाहिए। नहीं मिले तो कहता है, 'जलेबी लाओ न थोड़ी, जलेबी लाओ'। छोड़ न भाई, अनंत जन्मों से जलेबियाँ खाई हैं, फिर भी अभी तक याचकता रखते हो? जिसे लालसा होती है, उसे याचकता होती है। याचकता, वह लाचारी है, एक प्रकार की!

ये तो विषय की भीख माँगते हैं, तो वे सभी जानवर से भी गए बीते कहलाएँगे न!

खाने की भीख माँग सकते हैं। लेकिन खाने की भीख नहीं माँगते, तीन दिन निकल जाएँ, फिर भी। ऐसे खानदानी लोग विषय की भीख माँगते हैं। मैंने कहा, 'शायद अमरीका में नहीं माँगते होंगे?' तब कहते हैं, 'यह बात ही जाने दीजिए, यहाँ तो बहुत अधिक है और अधिक मात्रा में है'।

प्रश्नकर्ता : पुरुषों को विषय की भीख होती है, वैसे ही स्त्रियों को भी विषय की भीख होती है न?

दादाश्री : हाँ, इतना यदि पुरुषों को आ जाए न, तो पुरुष जगत् जीत जाएगा। अगर नहीं जीतेगा तो पुरुष यूज़लेस (बेकार) हो जाएगा। पुरुष, पुरुष कब तक कहलाएगा? स्त्री उससे विषय की भीख माँगे, तब तक! अधिक विषयी स्त्री है, फिर भी पुरुष मूरख बन जाता है यह भी आश्चर्य है न!

विषय में आसक्ति, वही परवशता

मुझसे कुछ लोग कहते हैं कि, 'इस विषय में ऐसा क्या रखा है कि विषयसुख चखने के बाद मैं मरणतुल्य हो जाता हूँ, मेरा मन मर जाता है, वाणी मर जाती है?' मैंने कहा कि, ये सब मरे हुए ही हैं, लेकिन आपको भान नहीं आता और वापस वही की वही दशा उत्पन्न हो जाती है। वर्ना ब्रह्मचर्य यदि संभल जाए तो एक-एक मनुष्य में तो कितनी शक्ति है! आत्मा के ज्ञान में रहना, उसे समयसार कहते हैं। आत्मज्ञान प्राप्त करे और जागृति रहे तो समय का सार उत्पन्न होता है और ब्रह्मचर्य, वह *पुद्गलसार* है। अत: इस विषय में तो एक दिन भी नहीं बिगाड़ना चाहिए, वह तो जंगली अवस्था कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : तो इस विषय से दूर कैसे जा सकते हैं?

दादाश्री : यदि एक बार ऐसा समझ ले कि यह गंदगी है तो दूर जा सकेगा। बाकी, यह गंदगी है, वह भी नहीं समझा है। अत: पहले ऐसी समझ आनी चाहिए। हमें, ज्ञानियों को तो सब 'ओपन' (खुला) दिखाई देता है। उसमें क्या-क्या होगा, तो तुरंत ही मति चारों ओर सभी जगह घूम आती है। अंदर कैसी गंदगी है और क्या-क्या है, वह सब दिखला देती है। जबकि यह तो विषय हैं ही नहीं। विषय तो जानवरों में होते हैं। यह तो सिर्फ आसक्ति ही है। बाकी विषय तो किसे कहते हैं कि जो परवश होकर करना पड़े। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के आधार पर परवशता से करना पड़े। जो इन बेचारे जानवरों में होता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर जब परवशता से नहीं करे, तब आसक्ति कहलाएगी?

दादाश्री : आसक्ति ही कहलाएगी न! ये तो शौक़ से ही करते हैं। दो पलंग मोल लाते हैं और वे एक साथ रख देते हैं, और मच्छरदानी एक बड़ी लाते हैं। अरे, यह भी कोई तरीका है? मोक्ष में जाना हो तो मोक्ष में जाने के लक्षण होने चाहिए! मोक्ष में जाने के लक्षण कैसे होते हैं? एकांत शैय्यासन के। शैय्या और आसन एकांत (अलग ही) होते हैं।

जब तक जिस बारे में अंधा है, तब तक उस बारे में दृष्टि खिलती ही नहीं, बल्कि और ज़्यादा अंधा होता जाता है। उससे दूर रहने के बाद उससे छूट सकता है। फिर उसकी दृष्टि खिलती जाएगी, उसके बाद समझ में आता जाएगा।

डबलबेड की प्रथा क्या होती होगी?

प्रश्नकर्ता : आपका वाक्य निकला था न, कि पुरुषों के स्त्रियों के साथ सोने से, इतने बड़े मर्द व्यक्ति स्त्रियों जैसे हो जाते हैं।

दादाश्री : हो ही जाएँगे न! अरे भाई, एक बिस्तर में सोया जाता होगा? अरे, कैसे व्यक्ति हैं ये? उस स्त्री की शक्ति भी नष्ट हो जाती है और दूसरी उसकी शक्ति, दोनों की शक्ति डिफॉर्म हो (बिगड़) जाती है। अमरीका वालों के लिए ठीक है, लेकिन उनका देखकर हम भी ले आए डबलबेड, किंग बेड!

इस बारे में सोचा ही नहीं है न। ऐसा किसी ने बताया ही नहीं, इसके लिए तो उलाहना ही नहीं दिया किसी ने, समझाया ही नहीं। बल्कि इसे प्रोत्साहन देते रहे कि डबलबेड होना चाहिए। ऐसा चाहिए, वैसा चाहिए....

डबलबेड का सिस्टम बंद करो और सिंगल बेड का सिस्टम रखो। पहले हिन्दुस्तान में कोई व्यक्ति इस तरह नहीं सोता था।

यह तो अपने महात्माओं से कह सकते हैं, बाहर तो नहीं बोला जा सकता। बाहर तो जो प्रवाह चल रहा है, उस प्रवाह से उल्टा चलें, वह गुनाह है। वह कुदरती प्रवाह है। यह बात तो सिर्फ महात्माओं के लिए है। यह सापेक्ष बात है, यह निरपेक्ष बात नहीं है। जो समझ सकें, उन्हीं के लिए हैं, बाहर तो यह बात कह ही नहीं सकते न! वह तो, जिसे यह (ज्ञान की) प्राप्ति हुई है, उनके लिए यह बात है।

नहीं याद आता आत्मा, बेडरूम में

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद निराकुलता बरतती है, फिर भी विषय में आसक्ति क्यों रह जाती है?

दादाश्री : भीतर ऐसा माल भरा है, इसलिए अभी तक उसके मन में श्रद्धा है कि इसमें सुख है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद, निरंतर केवल यही भाव करता हूँ, फिर भी (विषय सुख की मान्यता) छूटती नहीं है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन वह तो पहले का हिसाब है न। इसलिए छुटकारा नहीं हो सकता न।

प्रश्नकर्ता : विषय नहीं है लेकिन हूँफ (सहारा, सलामती) के लिए, ऐसा होता है कि नहीं, साथ में ही सोना है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है लेकिन वह तो, यह जो हिसाब है न, वह हिसाब सारा चुकता हो रहा है। हाँ, वह हिसाब चुक गया, ऐसा कब कहा जाएगा, साथ में सोएँ, लेकिन वह सब अच्छा नहीं लगे, अंदर अच्छा नहीं लगे और सोना पड़े, तब हिसाब चुक जाता है। पर अच्छा लगता है या नहीं इतना तो पूछ लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : खुद को पसंद है, लेकिन अंदर से प्रज्ञाशक्ति अथवा समझ चेतावनी देती है।

दादाश्री : मन को भले ही पसंद हो, लेकिन आपको पसंद है?

आपको समझ में आया न, कि यह भूल कहाँ है, कैसी हुई है? और भूल मिटानी तो होगी न? जो प्रारब्ध में हो वह भुगतना, लेकिन भूल तो मिटानी पड़ेगी न? भूल नहीं मिटानी पड़ेगी?

अरे, 'बेडरूम' तो नहीं बनाना है। वह तो,

एक ही रूम में सब साथ में सो जाना और बेडरूम तो संसारी जंजाल! यह तो 'बेडरूम' बनाकर पूरी रात संसार के जंजाल में पड़ा रहता है। फिर आत्मा की बात तो कहाँ से याद आएगी? 'बेडरूम' में आत्मा की बात याद आती होगी?

यह तो मनुष्यपन खो देते हैं। सारे ब्रह्मांड को हिला दें ऐसे लोग, देखो न, यह दशा तो देखो! यह हीन दशा देखो! आप समझे मेरी बात?

स्त्री संग छूटे तो हो जाए भगवान

पुरुष यदि स्त्रियों का संग पंद्रह दिनों के लिए छोड़ दे न, पंद्रह दिन दूर रहे, तो भगवान जैसा हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : पंद्रह दिन यदि पत्नी से दूर चले जाएँ तो वे फिर शक करेंगी हम पर।

दादाश्री : वह कुछ भी कहो, वह सब वकालत है। चाहे कितनी भी बहस करो तो चलता है वकालत में, जीतोगे सही, लेकिन वे एक्ज़ेक्ट प्रमाण नहीं हैं।

हम कहते हैं, अकेले अलग कमरे में सोने के लिए, क्या साइन्स होगा उसमें? साइन्टिफिक कारण है इसके पीछे। साल भर अलग रहने के बाद आप यदि एक ही पलंग पर सोने जाओगे न, तो जिस दिन आप पूरे दिन बाहर गर्मी में तपकर आए होंगे उस दिन पसीने की दुर्गंध आएगी। स्त्री को पसीने की दुर्गंध आएगी, दुर्गंध उत्पन्न होगी। साथ-साथ में सोने से दुर्गंध का पता नहीं चलता। नाक की इन्द्रिय बेकार हो जाती है। रोज़ प्याज़ खाने वाले को, सारे घर में प्याज़ भरी हो, फिर भी उसे गंध नहीं आती। और जो प्याज़ नहीं खाता हो, उसे यहाँ से दो सौ फीट दूर भी प्याज़ रखी हो तो भी गंध आती है। यानी साथ में सोने से नाक की इन्द्रिय खत्म हो जाती है। वर्ना क्या एक साथ सो पाते? यह प्याज़ की बात समझ में आई आपको?

प्रश्नकर्ता : आ गई, अच्छी तरह।

दादाश्री : ऐसा ज्ञान भी मुझे देना पड़ेगा? आप सभी को जानना चाहिए ऐसा ज्ञान तो! यह भी क्या मुझे बताना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : जब तक आप नहीं बताते, तब तक वह आवरण नहीं हटता, भले ही कितना भी जानता हो, फिर भी। आपके वचनबल से ही हटते हैं सभी के।

दादाश्री : इस जगत् में आत्मा के अलावा जो कुछ भी प्रिय करने गया, वह विषय हो जाता है। उसे प्रिय माना तभी से आवरण छा जाता है। इस वजह से उसकी अप्रियता कभी भी दिखाई नहीं देती। जिनका एन्ड (अंत) आता है वे सभी विषय हैं। जिसका एन्ड (अंत) नहीं आता, वह है आत्मा।

अब्रह्मचर्य, वह पाशवता

आत्मा में कितनी शक्ति होगी? अनंत शक्तियाँ हैं आत्मा में लेकिन सारी शक्तियाँ आवृत हुई पड़ी हैं। जब आप 'ज्ञानी पुरुष' के पास जाते हो, तब वे आवरण हटा देते हैं और आपकी शक्तियाँ खिल उठती हैं। भीतर सुख भी अपार है। फिर भी विषयों में सुख खोजते हैं। अरे, विषय में सुख होता होगा? इन कुत्तों को भी यदि खाना-पीना दिया हो न, तो वे भी बाहर नहीं जाते। ये बेचारे तो भूख के कारण बाहर घूमते रहते हैं। ये मनुष्य सारा दिन खाकर घूमते रहते हैं। मनुष्यों का भूख का दुःख मिटा है, तो उन्हें विषयों की भूख लगी है। मनुष्य में से पशु

बनने वाला हो तभी तक विषय है। लेकिन जो मनुष्य में से परमात्मा बनने वाला है उसमें विषय नहीं होता। विषय तो जानवरों की कोड लैग्वेज (सांकेतिक भाषा) है, पाशवता है, 'फुल्ली' (पूर्ण) पाशवता है। अत: वह तो होनी ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : विषयदोष से जो कर्मबंधन होता है, उसका स्वरूप कैसा होता है?

दादाश्री : जानवर के स्वरूप का। विषयपद ही जानवर पद है। पहले तो हिन्दुस्तान में निर्विषयी विषय था। यानी एक पुत्रदान तक का ही विषय था।

अत: यह मोह है, मूर्छित स्थिति है। यह तो हम बात कर रहे हैं, वर्ना ऐसी बात कोई करेगा नहीं न! ऐसा कहें तभी तो वैराग्य उत्पन्न होगा न लोगों में!

प्रश्नकर्ता : वैराग्य टिके ऐसा कोई नियम है?

दादाश्री : वैराग्य टिके तब तो काम ही निकाल ले। बिना विचार के वैराग्य नहीं टिक सकता। निरंतर विचारशील हो उसी का वैराग्य टिकता है। कहता है, 'मैं भोग रहा हूँ', 'अरे, इसमें क्या भोगने जैसा है?' जानवरों को भी शर्म आती है इसमें तो! भोगने से ही यह सब भूल जाता है फिर। कर्ता-भोक्ता हुआ कि सारा उपदेश भूल जाता है। कर्ता-भोक्ता नहीं हुआ तो सारा उपदेश उसे ध्यान में रहता है। तभी वैराग्य टिकेगा न। वर्ना वैराग्य टिकेगा ही नहीं न।

पूरी दुनिया ब्रह्मचर्य को 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करती है। फिर जिनसे ब्रह्मचर्य पालन नहीं किया जा सकता, वह अलग बात है। अब्रह्मचर्य तो मनुष्य में रही हुई पाशवता है। हर एक जगह पर अब्रह्मचर्य को पाशवता माना गया है। इसलिए तो दिन में अब्रह्मचर्य के लिए मना किया गया है। क्योंकि वह पाशवी उपचार है। इसीलिए रात को, अंधेरे में, कोई देखे नहीं, जाने नहीं, खुद की आँखें भी नहीं देखें, उस तरह किया जाता है। मनुष्य को तो क्या यह सब शोभा देता है? इसलिए तो लोगों ने ऐसा रखा है कि विषय का सेवन रात के अँधेरे में ही किया जाना चाहिए। सूर्यनारायण की उपस्थिति में यदि विषय सेवन करोगे तो हार्टफेल के आसार पैदा होंगे, हाई ब्लडप्रेशर या लो ब्लडप्रेशर हो जाएगा और हार्टफेल हो जाएगा। अत: विषय अँधेरे में सेवन करने की चीज़ है। लिखा है न कि, 'छिपे रखने पड़ते हैं जो काम...' यानी यह विषय कैसी चीज़ है, कि गुप्त रखनी पड़ती है। किसी से कहा भी नहीं जा सकता। फिर भी शास्त्रकारों ने अलाउ किया है कि सभी की उपस्थिति में शादी करते हो, इसलिए हक़दार हो।

है डिस्चार्ज, फिर भी माँगे जागृति

अपना यह 'अक्रम विज्ञान' क्या कहता है? चार्ज को 'चार्ज' कहता है और डिस्चार्ज को 'डिस्चार्ज' कहता है। डिस्चार्ज यानी हमने कोई भी त्याग करने को नहीं कहा है। यह ज्ञान दिया, अत: आपको जिनका त्याग करना था, वे अहंकार और ममता, उन दोनों का त्याग हो गया और ग्रहण करना था निज स्वरूप, 'शुद्धात्मा', वह ग्रहण हो गया। यानी त्याग करने की चीज़ का त्याग हो गया और ग्रहण करने की चीज़ ग्रहण हो गई। अत: ग्रहण-त्याग का झंझट रहा ही नहीं कि मुझे यह ग्रहण करना है या इसका त्याग करना है, ऐसा! दूसरा, अब सिर्फ *निकाल* करना रहा, क्योंकि हमने हमारे ज्ञान से खोज की है कि

यह सब डिस्चार्ज है। अब है डिस्चार्ज, फिर भी इस काल के लोगों को हमें चेतावनी देनी पड़ती है, स्त्री-पुरुष के विषय संबंध में चेतावनी देनी पड़ती है।

एक महात्मा हैं, जो फिर ऐसा मान बैठे थे कि यह सब डिस्चार्ज ही है। तब मैंने उन्हें समझाया कि डिस्चार्ज का मतलब क्या है? जब आपको बुख़ार चढ़ा हो तो फिर आपकी पत्नी से पूछना कि आपको बुख़ार चढ़ा है? दोनों को बुख़ार चढ़े तो दवाई पी लेना। एक को बुख़ार चढ़ा हो लेकिन अगर पत्नी को बुख़ार नहीं चढ़ा हो, तब तक आपको भी दवाई नहीं पीनी है, और दोनों को बुख़ार चढ़े, तभी पीना। यह तो रोज़ पीता है। मीठी है न, फर्स्ट क्लास, दोनों... यानी मैं ऐसा कहता हूँ उन्हें। नहीं तो शरीर कैसे दिखेंगे! अब, उस अज्ञानता में पहले दु:ख था, जलन ही थी पूरा दिन। इसलिए तू हमेशा, यही विषय लेकर बैठ गया था लेकिन अब जलन नहीं रही। अब ज़रा सीधा चल न! जब तक किसी को जलन रहे, तब तक मैं नहीं डाँटता उसे। मैं समझता हूँ कि जलन वाला मनुष्य क्या नहीं करेगा? अब मैंने आपको अखंड आनंद वाला बना दिया है, अब क्यों यह पीते रहते हो? बिना बुख़ार के दवाई पीते हो? कोई बिना बुख़ार के दवाई पीता है भला? ज़रूरत ही नहीं है शरीर को। यों ही आनंद में है। समझने जैसी बात है।

और वह जो है, वह शरीर के लिए नुकसानदेह चीज़ है। यह आप जो खाते हो, पीते हो उसका एक्स्ट्रैक्ट निकलते-निकलते जो वीर्य बनता है, वह पूरा सार है। इसलिए उसका उपयोग इकोनोमिकली करना चाहिए। यों ही फ़िजूल खर्च नहीं करना है। हाँ! यानी आपको तो चंदूभाई से कहना है कि, 'भाई, ऐसा नहीं चलेगा, फ़िजूल खर्च मत करना', आप तो विषयी हो ही नहीं। आपको लेना-देना नहीं है लेकिन आपको चंदूभाई से कहना चाहिए। वर्ना फिर चंदूभाई बीमार हो गए तो आपको ही मुसीबत होगी न? अत: यदि सावधान रहो तो उसमें गलत क्या है? वर्ना यदि शरीर निर्वीर्य हो जाएगा, तो यह कहेगा 'अरे, गया, वह गया, यह गया'। घन चक्कर! तो क्यों पहले दादाजी का कहा नहीं माना और अब गया-गया कर रहा है! पैंतीस साल की उम्र में तो एक व्यक्ति को पक्षाघात हो गया था। वे बहुत आसक्ति वाले थे। यों तो अच्छी तरह धर्म का पालन करते थे। फिर मैंने उनसे कहा, 'आप आसक्ति मंद नहीं कर रहे थे, लेकिन अब तो मंद करनी पड़ेगी न?' तब कहने लगे, 'मंद क्या? अब तो पूरी ही गई न! अब कहाँ रही आसक्ति?' तब मैंने कहा, 'पहले से समझ गए होते तो यह झंझट नहीं हुई होती न!' इस तरह जब जेल में बंद हो जाते हो, तब सीधे होते हो, तो फिर मुक्त रहने में क्या हर्ज है?' लेकिन मुक्ति में नहीं रहता, नहीं? जेल में जाएँगे तब रहेंगे सीधे!

इसलिए फिर यह अक्रम मार्ग निकला है कि 'भाई नहीं, ऐसा नहीं, दोनों को बुख़ार आए तब दवाई पीना। बुख़ार में सारी रात हुड... हुड... करते बैठे रहो, उसके बजाय पी लेना न! ऐसा अक्रम विज्ञान निकला है!

चार्ज-डिस्चार्ज की भेदरेखा

समझदार को विषय शोभा नहीं देता। एक ओर लाख रुपये मिल रहे हों और उसके सामने विषय का संयोग हो तो लाख को जाने दे, लेकिन विषय का सेवन नहीं करे। विषय ही संसार का मूल कारण है, जगत् का कॉज़ यही है न! हमने

तो यह विषय की छूट इसलिए दे रखी है, कि नहीं तो इस मार्ग को कोई प्राप्त ही नहीं कर पाता। इसलिए हमने यह अक्रम विज्ञान डिस्चार्ज और चार्ज के रूप में समझाया है। यह विषय डिस्चार्ज है, ऐसा समझने की शक्ति नहीं है न सभी में। इनका सामर्थ्य क्या? वर्ना हमारा जो शब्द है न, 'डिस्चार्ज', तो यह विषय डिस्चार्ज स्वरूप ही है। लेकिन यह बात समझने का उतना सामर्थ्य ही नहीं है न! क्योंकि रात-दिन विषय की ही जलन वाले हैं। वर्ना, यह चार्ज और डिस्चार्ज हमने जो रखा है वह एक्ज़ेक्टली वैसा ही है। यह तो बहुत ऊँचा मार्ग बताया है, वर्ना इनमें से कोई धर्म प्राप्त कर ही नहीं पाता न! ये बीवी-बच्चे वाले धर्म कैसे प्राप्त कर पाते?

प्रश्नकर्ता : कई लोग ऐसा समझते हैं कि 'अक्रम' में ब्रह्मचर्य का कोई महत्व ही नहीं है। वह तो डिस्चार्ज ही है न।

दादाश्री : अक्रम का अर्थ ऐसा है ही नहीं। ऐसा अर्थ करने वाला 'अक्रम मार्ग' को समझा ही नहीं है। यदि समझा होता तो मुझे उसे विषय के संबंध में फिर से कहना ही नहीं पड़ता। अक्रम मार्ग यानी क्या कि डिस्चार्ज को डिस्चार्ज माना जाता है लेकिन इन लोगों के लिए डिस्चार्ज है ही नहीं। यह तो, अभी लालच है अंदर। ये सब तो राज़ी-खुशी से करते हैं। डिस्चार्ज को किसी ने समझा है? वर्ना हमने जो मार्ग दिया है, उसमें फिर ब्रह्मचर्य से संबंधित कुछ कहने को रहता ही नहीं। यह तो, खुद की भाषा में मनचाहा अर्थ करते हैं फिर!

जो व्यक्ति खाना खा चुका हो, उसे यदि फिर से खाने के लिए बैठाएँ तो वह बहुत शर्माएगा, लेकिन फिर वह खाएगा ज़रूर। लेकिन वह क्या करेगा? क्या वह सचमुच खाएगा? इसी तरह से विषय में होना चाहिए। विषय-विकार तो देखना भी अच्छा नहीं लगे, सोचते ही कँपकँपी आ जाए। सोचते ही उल्टी होने लगे। ऐसा होना चाहिए।

'डिस्चार्ज' किस भाग को कहते हैं, इसे लोग समझते नहीं हैं और 'डिस्चार्ज' का अर्थ अपनी भाषा में करते हैं।

प्रश्नकर्ता : 'डिस्चार्ज' किस भाग को कहते हैं?

दादाश्री : आप चलती गाड़ी से कितनी बार गिर जाते हो? तुम चलती गाड़ी से गिर जाओ तो वह 'डिस्चार्ज' कहलाएगा। वहाँ तुम गुनहगार नहीं हो, लेकिन कोई जान-बूझकर गिरता है क्या? वहाँ उसकी ज़रा सी भी इच्छा होती है? आपको यह बात समझ में आई? बात समझने योग्य है न?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल, पक्का समझ में आ गई।

दादाश्री : कान पकड़कर कह रहे हो क्या? वर्ना 'डिस्चार्ज' की बात में तो भीतर पोल मारता है। सिर्फ इस विषय के बारे में ही पोल नहीं मारना है।

प्रश्नकर्ता : पोल कैसे मारते हैं?

दादाश्री : जैसे चलती गाड़ी से गिर जाए, उसे हम 'डिस्चार्ज' कहते हैं, उसी तरह खुद के घर में भी नियम तो होना चाहिए न? यह तो ऐसा है न, कि खुद के हक की स्त्री के साथ का विषय, वह अनुचित नहीं है। लेकिन फिर भी साथ-साथ इतना समझना चाहिए कि उसमें अनेकों 'जर्म्स' (जीव) मर जाते हैं। अत: अकारण तो ऐसा होना ही नहीं चाहिए न? कारण हो तो बात

अलग है। वीर्य में 'जर्म्स' ही होते हैं और वे मानवबीज के होते हैं। अत: जब तक हो सके, तब तक इसमें सावधान रहना। यह हम आपको संक्षेप में बता रहे हैं, बाकी इसका तो अंत ही नहीं है न।

समभाव से निकाल होने पर पत्नी होते हुए भी मोक्ष

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा स्वरूप होने के बाद दुनिया में पत्नी के साथ संसार व्यवहार करना चाहिए या नहीं? और वह किस भाव से? यहाँ समभाव से *निकाल* (निपटारा) कैसे करना चाहिए?

दादाश्री : यह व्यवहार तो, यदि आपकी पत्नी हो तो पत्नी के साथ, समाधानपूर्वक व्यवहार रखना। आपको और उन्हें, दोनों का समाधान हो ऐसा व्यवहार रखना। उन्हें असमाधान हो और आपको समाधान रहे, तो ऐसा व्यवहार बंद कर देना। आपसे (आपकी) स्त्री को कोई दु:ख नहीं होना चाहिए। आपको क्या लगता है? कैसा व्यवहार करना चाहिए? उसे दु:ख नहीं हो, ऐसा। हो सकेगा या नहीं? हाँ, यह जो स्त्री से विवाह किया है वह संसार व्यवहार के लिए है, न कि साधु बनने के लिए। फिर स्त्री मुझे गालियाँ नहीं देगी, कि 'इन दादाजी ने मेरा संसार बिगाड़ दिया!' मैं ऐसा नहीं कहना चाहता। मैं तो आपसे इतना कहता हूँ कि यह जो 'दवाई' (विषय संबंध) है, वह मीठी दवाई है। और जिस तरह दवाई हमेशा सही मात्रा में ली जाती है, उसी तरह यह भी सही मात्रा में लेना।

मीठी लगी इसलिए बार-बार पीते रहें, ऐसा कहीं करना चाहिए? थोड़ा तो सोचो। क्या नुकसान होता है? तो वह यह है कि जो भोजन लेते हैं उससे ब्लड (रक्त) बनता है, अन्य सब होते-होते आखिर में उससे रज और वीर्य बनकर खत्म हो जाता है। विवाहित जीवन की शोभा कब रहेगी, कि जब दोनों को बुख़ार चढ़ने पर ही वे दवाई पीएँ, तब। बिना बुख़ार दवाई पीते हैं या नहीं? एक को बुख़ार नहीं चढ़ा हो फिर भी दवाई पीए तो उससे विवाहित जीवन की शोभा नहीं रहती। दोनों को बुख़ार चढ़े तभी दवाई पीनी चाहिए। दिस इज़ द ऑन्ली मेडिसिन (सिर्फ यही दवाई है)। मेडिसिन मीठी है, सिर्फ इसलिए रोज़ पीने योग्य नहीं है। विवाहित जीवन की शोभा रखनी हो, तो संयमी की ज़रूरत है। ये सभी जानवर असंयमी कहलाते हैं। अपना जीवन तो संयमी होना चाहिए! ये सभी जो पहले, राम-सीता आदि सभी हो चुके हैं, वे सभी संयम वाले थे! स्त्री के साथ संयमी! तब यह असंयम, वह क्या कोई दैवीगुण है? नहीं। वह पाशवी गुण है। मनुष्य में ऐसे गुण नहीं होने चाहिए। मनुष्य असंयमी नहीं होना चाहिए। जगत् को यह समझ ही नहीं है कि विषय क्या है! एक बार के विषय में करोड़ों जीव मर जाते हैं, वन टाइम में तो, समझ नहीं होने की वजह से यहाँ मज़े लेते हैं। समझते नहीं हैं न! मजबूरन जीव मरें, ऐसा होना चाहिए। लेकिन यदि समझ नहीं हो, तब क्या हो सकता है?

इसलिए हमने कहा है कि पत्नी का संग रखने में हर्ज नहीं है, लेकिन ऐसी शर्त पर कि दोनों एकता और समझदारी के साथ रहना। डॉक्टर ने बताया हो, उतनी बार दवाई पीना। ये तो रोज़ दो-दो, तीन-तीन बार दवाई पीए, ऐसा लोगों ने कर दिया है न! और वास्तव में वह दवाई मीठी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इसमें भी, इतनी ही दवाई पीना, वह क्या अपने काबू में है? वह डोज़ काबू में नहीं रहे तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : काबू में नहीं रहे, ऐसी कोई चीज़ होती ही नहीं इस दुनिया में।

ऐसा है, इन संसारियों को ज्ञान दिया है। साधु बनने को मैंने नहीं कहा है, लेकिन जो 'फाइलें' हैं, उनका 'समभाव से *निकाल*' करना, ऐसा कहा है। और प्रतिक्रमण करना। ये दो उपाय बताए हैं। ये दो करोगे तो आपकी दशा को उलझाने वाला कोई है नहीं। उपाय नहीं बताए होते तो किनारे पर खड़े ही नहीं रह पाते न। किनारे पर जोखिम है।

बुख़ार चढ़े तो दवाई पीना

'बुख़ार चढ़े तो दवाई पीना' मेरी यह बात आपको पसंद आई या नहीं आई?

प्रश्नकर्ता : पसंद आई न।

दादाश्री : ऐसा! पसंद आई हो तो आज से शुरू कर देना। पसंद नहीं हो तो थोड़े दिनों बाद। हमें जल्दी क्या है? पच्चीस साल बाद! इसमें थोड़े ही कोई ज़बरदस्ती है? बाकी, सबसे बड़ी जोखिमदारी तो इस विषय की जोखिमदारी है। फिर भी हमने कहा है कि बुख़ार चढ़े तो ही दवाई पीना, तो जोखिमदारी हमारी और आपको मोक्षमार्ग में बाधा नहीं आएगी। यह इतनी सारी जोखिमदारी लेने के बावजूद आप कहते हो कि हमें ठीक से पूरी छूट नहीं देते, तो वह आपकी भूल ही है न। आपको क्या लगता है? अपना यह 'अक्रम विज्ञान' है। स्त्री के साथ रहना। आज सभी शास्त्रों ने स्त्री के साथ रहने को मना किया है, जबकि हम रहने को कहते हैं। लेकिन साथ में यह थर्मामीटर देते हैं यानी कि स्त्री को दुःख नहीं हो, उस तरह से विषय का व्यवहार रखना।

प्रश्नकर्ता : वह बुख़ार चढ़ना बंद होगा या नहीं?

दादाश्री : नहीं, वह तो वापस फिर से चढ़ेगा।

प्रश्नकर्ता : तो उसे बंद कैसे करें?

दादाश्री : उसे बंद मत करना। दोनों को बुख़ार चढ़े और दवाई पीओ तो जोखिमदारी आपकी नहीं है, तब फिर मेरी जोखिमदारी। यदि शौक़ की खातिर दवाई पीओ, तो आपकी जोखिमदारी। मैं जानता हूँ कि आप सभी शादीशुदा हो, यानी सभी को कुछ यों ही ज्ञान नहीं दिया है! लेकिन साथ ही साथ अक्रम की इतनी ज़िम्मेदारी ली है कि यहाँ तक नियम में रहो, तो जोखिमदार मैं हूँ।

प्रश्नकर्ता : वाइफ की इच्छा नहीं हो और हज़बेन्ड के फोर्स से दवाई पीनी पड़े, तब क्या करें?

दादाश्री : लेकिन उसमें तो क्या करें? किस ने कहा था, शादी करो?

प्रश्नकर्ता : भुगते उसकी भूल। लेकिन दादा कुछ ऐसा बताइए न, ऐसी कोई दवाई बताइए कि जिससे सामने वाले व्यक्ति का प्रतिक्रमण करें, कुछ करें तो कम हो जाए।

दादाश्री : वह तो इसे समझने से, बात समझाने से कि दादा ने कहा है, कि यह तो बार-बार पीते रहने की चीज़ नहीं है। ज़रा सीधे चलो न! यानी महीने में छः-आठ दिन दवाई पीनी चाहिए। अपना शरीर अच्छा रहेगा, दिमाग़ अच्छा रहेगा, तो फाइल का *निकाल* होगा। वर्ना डिफॉर्म हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : बुख़ार चढ़े ही नहीं ऐसा कुछ कर दीजिए।

दादाश्री : ऐसा ही कर दिया है। लेकिन आपको अभी तक....

प्रश्नकर्ता : निश्चय कच्चा है?

दादाश्री : निश्चय कच्चा है। यह तो इफेक्ट है, यह डिस्चार्ज है, ऐसा करके निश्चय कच्चा पड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : समझ में आए, तो वर्तन में आएगा ही न?

दादाश्री : समझ में तो आया ही नहीं है। यह बुद्धिपूर्वक का सुख नहीं है, ऐसे समझ में आया ही नहीं है। मैंने जलेबी खाने की छूट दी, खीर खाने की छूट दी है। इस शराब में से जो सुख आता है, वह बुद्धिपूर्वक का सुख नहीं कहलाता। सिगरेट में से जो सुख आता है, वह बुद्धिपूर्वक का सुख नहीं कहलाता। यों देखा-देखी से ही है।

एक बार सिर्फ जान लेने की ही ज़रूरत है कि बुख़ार आने पर ही दवाई पीनी चाहिए। फिर उस ओर का तय हो जाए, तो फिर मन वैसा ही निश्चय रखता है। क्योंकि उसे आत्मसुख तो मिला है न! जिसे किसी भी प्रकार का सुख हो ही नहीं, उसके लिए तो फिर यह विषय सुख है ही। उसे तो हम मोड़ेंगे ही नहीं और उसे तो मोड़ भी नहीं सकते। जबकि यह तो आत्मा की तरफ का सुख मिला है, इसलिए खुद के इस सुख की ओर मुड़ जाता है। और वापस जब मन ज़रा सा भी बाहर कहीं टकराए तो उस समय वह बाहर विषय की ओर नहीं मुड़कर बल्कि अंदर आत्मा की ओर मुड़ जाता है। लेकिन जिसे यह ज्ञान नहीं मिला हो, उसे क्या होगा? यह मोक्ष का मार्ग है, इसलिए यहाँ ज़रा इतना ही समझ लेना। आपको यह बात पसंद आई क्या? यह 'अक्रमज्ञान' सही है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही है।

दादाश्री : विषय की उपस्थिति में भी मोक्ष हो सके, ऐसा यह 'ज्ञान' है न! यह हमारी खोज है, बहुत उच्च प्रकार की खोज है! आपको लड्डू-जलेबी वगैरह खाने की छूट दे रखी है। कृपालुदेव ने तो क्या कहा है कि, 'मनपसंद थाली आए तो औरों को दे देना'। तो क्या किसी ने कभी औरों को दी है? एक भी ऐसा जन्मा है कि जिसने अपनी मनपसंद थाली किसी और को दे दी? ये कोई दे दें ऐसे हैं? वह तो, सिर्फ 'ज्ञानी पुरुष' ही ऐसा कर सकते हैं। जबकि मैंने तो आपसे कहा है कि, 'मनपसंद थाली आराम से खाना। आम खाना, आमरस खाना'। किसी ने भी ऐसी छूट नहीं दी है। अभी तक किसी शास्त्र ने ऐसा नहीं कहा है कि संसारी वेश में ऐसा संभव है। इन सभी शास्त्रों ने तो 'स्त्री से दूर भागो', ऐसा कहा है। लेकिन हमने यह नयी खोज की है! मेरी यह नयी वैज्ञानिक खोज है। चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान है यह!

यहाँ हम आपको खुद की स्त्री या खुद के पुरुष की मर्यादा में ही विषय की छूट देते हैं। उसमें ऐसी ज़िम्मेदारी नहीं रहती इसीलिए हमने छूट दी है। बाकी शास्त्रकारों ने तो इसे बिल्कुल निकाल ही दिया है कि, 'अरे, स्त्री को छोड़ दो', ऐसा कह दिया। लेकिन यह तो अपना विज्ञान है, इसलिए एक ओर शांति रहे ऐसा है और इसीलिए आज्ञा में रहने को तैयार होते हैं। बल्कि छूट दी है, उसका यदि उल्टा अर्थ निकाले तब तो इसमें मार खा जाएगा न!

रोंग बिलीफ तोड़ना, वह पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : विषय सुख से दूर रहने के लिए जो प्रयत्न किए जाते हैं, उन्हें पुरुषार्थ कहते हैं?

दादाश्री : हाँ। और वह सुख है ही नहीं। वह केवल मान्यता ही है, 'रोंग बिलीफें' ही हैं। व्यवहार में लोगों से यह बात नहीं कह सकते। संसार व्यवहार के लिए यह काम की है ही नहीं। यह बात संसार व्यवहार वाले लोगों से कहें तो उन्हें दु:ख होगा। क्योंकि सिर्फ इसी एक सुख का अवलंबन है। वह भी उन बेचारों का हमने ले लिया! यह बात तो जिन्हें ज्ञान हों, उनसे की जा सकती है, वर्ना बात भी नहीं की जा सकती।

ज्ञान ऐसी चीज़ है, जिसे जान लेने की ज़रूरत है। ज्ञान को जान लेना है। ज्ञान जानना है और वह जाना हुआ जब दर्शन में आता है, 'बिलीफ' में आता है, तब सभी विषय खत्म हो जाते हैं।

यह तो हम विषय से संबंधित बहुत गहरी चर्चा नहीं करते, उसका कारण यह है कि ये लोग बाह्य दृष्टि छोड़ दें, तो भी बहुत बड़ी बात है। बाह्य दृष्टि यानी, बाहर जो 'देखतभूली' होती है, यदि वह नहीं हो, तो भी बहुत हो गया। इसलिए हमने कहा है कि बाहर दृष्टि बिगड़े तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना। उसे खुद के हक का विषय छोड़ने को नहीं कहते। क्योंकि यदि उसे हक का विषय छोड़ने को कहेंगे, तो फिर बाहर उसका बिगड़ जाएगा।

अक्रम विज्ञान ने दी छूट

प्रश्नकर्ता : लेकिन जो लोग विषय सुख भोगते हैं, उन्हें उतना नुकसान तो होगा न?

दादाश्री : जितना-जितना 'चार्ज' हुआ है, उसमें तो हमें एतराज़ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह 'चार्ज' हुआ है, ऐसा कह ही कैसे सकते हैं? वह तो घर में पत्नी के साथ रह रहे हों तो यह विषय तो सहज हो चुका होता है और कई बार हो जाता है, तो भी वह 'चार्ज' हुआ ही कहलाएगा?

दादाश्री : जो 'चार्ज' हो चुका है, उससे ज़्यादा नहीं हो पाएगा। जो 'चार्ज' हो चुका है, उससे ज़्यादा हो सके, ऐसा नहीं है। इसीलिए तो हम विषयों के लिए ऐसे छूट देते हैं न! वर्ना क्या छूट देते? वह तो ज़िम्मेदारी है और किसी ने ऐसी छूट दी भी नहीं है न।

प्रश्नकर्ता : किसी ने भी छूट नहीं दी है। इसमें तो बहुत 'स्ट्रिक्ट' (सख़्त) हैं।

दादाश्री : इसमें 'स्ट्रिक्ट' हैं इसलिए लोग प्राप्ति नहीं कर पाते। सत्य हकीकत नहीं जानने की वजह से इसमें 'स्ट्रिक्ट' रहते हैं। इसलिए लोग प्राप्ति नहीं कर पाते। संसारी तो ऐसा ही कहते हैं कि, 'भाई, हम तो संसारी हैं, हमारा कल्याण तो हो ही नहीं सकेगा न'! खुद के बारे में ये लोग ऐसा मानकर बैठ गए हैं। अत: यह 'स्ट्रिक्ट' होना गलत है। 'हम' ज्ञान द्वारा अलग तरह का देखते हैं!

प्रश्नकर्ता : जितने समय तक 'डिस्चार्ज' होता है, तो उतना आवरण नहीं बढ़ता?

दादाश्री : अपने 'ज्ञान' वालों में आवरण नहीं बढ़ता, हमारी आज्ञा है न! हमने हक के विषय के लिए मना किया ही नहीं है न। मना किया होता तो इन सबके घर में क्या होता?

प्रश्नकर्ता : आपने यदि उस के लिए मना किया होता तो बहुत बड़ा तूफ़ान हो जाता।

दादाश्री : लेकिन हम ऐसा कहते ही नहीं। किसी को भी दु:ख हो ऐसा वर्णन ही नहीं करते न।

प्रश्नकर्ता : अभी तक मैं इसी द्वंद्व में था। मुझे ऐसा लगता था कि विषय से आवरण आता है।

दादाश्री : लेकिन दुनिया ने जो देखा होगा, मैंने उससे कुछ नई ही तरह का देखा है और तभी मैं ऐसी आज्ञा दे सकता हूँ, वर्ना देता ही नहीं न। यह तो जोखिमदारी है। मैंने ऐसा विज्ञान देखा है। तभी मैंने आपको छूट दी है, वर्ना छूट नहीं दी जा सकती। मैंने आपको किस तरह की छूट दी है? हमने हक के विषय की छूट दी है, ताकि फिर बाहर दृष्टि नहीं बिगड़े और अगर बिगड़ गई हो तो सुधार लेना। लेकिन हक की जगह का एक ही स्थान तय हो गया इसलिए फिर आपको 'अलाउ' (अनुमति) करते हैं। लेकिन यह क्या सिर्फ आत्मसुख है या दूसरा कोई सुख है? इतना जानने के लिए आपसे कहते हैं कि छ: महीनों के लिए विषय छोड़कर तो देखो! सिर्फ पता लगाने के लिए ही, कि यह सुख आत्मा में से आया या विषय में से आया?

प्रश्नकर्ता : इतना तो पता चलता है कि विषय की वजह से सच्चे सुख का पता नहीं चलता, फिर भी वह हो जाता है।

दादाश्री : हो जाए, उसमें हर्ज नहीं है। यह 'अक्रम विज्ञान' है, बहुत अलग तरह का विज्ञान है! वर्ना वहाँ क्रमिक में तो एक भी 'डिस्चार्ज' नहीं चलने देते। हमने तो पूरी ज़िंदगी के 'डिस्चार्ज' चला लिए हैं। यह तो 'अक्रम विज्ञान' है! विज्ञान यानी क्या, कि कोई उसकी बराबरी नहीं कर सकता!

ज्ञान-दर्शन से टूटे विषय में सुख की बिलीफ

मैंने आपको आत्मा तो दिया है, लेकिन कौन सी चीज़ आप पर उसका असर नहीं होने देती? विषय! यह विषय कहीं रोज़-रोज़ नहीं होता, कभी-कभी होता है लेकिन उसके बाद उसका असर बहुत परेशान करता है। विषय का अभिप्राय बहुत मार खिलाता है। ब्रह्मचर्य का भंग हुआ, इसलिए जंतु का असर हुआ न! यदि ऐसा भंग हो ही नहीं, तब तो कितना अच्छा रहेगा! इन जंतुओं का सूक्ष्म असर इतना अधिक खराब पड़ता है कि घड़ीभर भी चैन से नहीं बैठने देता।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा पद में रहने के लिए मुख्य चीज़ कौन सी चाहिए?

दादाश्री : विषय में से मुक्त हो जाए तो फिर शुद्धात्मा में रह पाएगा। शादीशुदा हो तो उसमें हमें एतराज़ नहीं है, लेकिन हरहाया में एतराज़ है। पत्नी के साथ पाँच महाव्रतों में से, एक महाव्रत का, ब्रह्मचर्य का भंग होता है और इस कलियुग में तो एक-दूसरे में ऐसे जंतु होते हैं कि फिर दोनों को चैन से बैठने ही नहीं देते। क्योंकि इन बाहर भटकने वालों को 'जर्म्स' बहुत ही नुकसान करते हैं। जिसका खुद को पता नहीं चलता। इसलिए मैं कहता हूँ न कि एक से शादी कर। क्योंकि यह तेरी नेसेसरी (आवश्यक) चीज़ है। खुद ने पूर्वजन्म में ब्रह्मचर्य के भाव नहीं किए है इसलिए शादी करनी पड़ती है।

जिसने शादी की है, उसके लिए तो हमने एक ही नियम दिया है कि तुझे अन्य किसी स्त्री के प्रति दृष्टि नहीं बिगाड़नी है। शायद कभी ऐसी दृष्टि हो जाए तो प्रतिक्रमण विधि करना और निश्चय करना कि ऐसा फिर से नहीं करूँगा। जो खुद की स्त्री के अलावा अन्य स्त्री की ओर नहीं

देखता, अन्य स्त्री पर जिसकी दृष्टि नहीं रहती, दृष्टि जाए फिर भी उसके मन में विकारी भाव नहीं होते, विकारी भाव हो जाएँ तो वह खुद बहुत पछतावा करता है, तो इस काल में उसे एक पत्नी होने के बावजूद भी, 'ब्रह्मचर्य में है', ऐसा कहा जाएगा।

खुद की स्त्री के साथ के विषय में भी नियम होना चाहिए। कृपालुदेव ने कहा है कि महीने में दो दिन, पाँच दिन या सात दिन के लिए, ऐसा तू ज्ञानी पुरुष की उपस्थिति में तय कर, तब फिर वे ज्ञानी पुरुष यह ज़िम्मेदारी खुद के सिर ले लेते हैं और फिर हम विधि कर देते हैं। हमारी आज्ञा हो जाए तो हर्ज नहीं है। हमारी आज्ञानुसार हो, उसे कोई बाधा नहीं आएगी।

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान के बगैर वह *लक्ष* बैठना बहुत मुश्किल है।

दादाश्री : इस ज्ञान के बगैर फिट ही नहीं होगा न।

महावीर भगवान तीस साल तक पत्नी के साथ रहे थे और बेटी भी हुई थी। और आखिर में महावीर भगवान को भी अलग होना पड़ा था। आखिरी बयालीस साल स्त्री के बगैर ऐसे ही रहे थे। आपके तो आखिरी पंद्रह साल स्त्री के बिना गुज़रें, मन-वचन-काया से यह छूट जाए तो भी बहुत हो गया, ऐसा कहते हैं। वर्ना अंतिम दस साल निकले तो भी बहुत हो गया। और कुछ नहीं, तो अंत में ऐसा ब्रह्मचर्य होना चाहिए। अब वह उदय कब आएगा? जब इससे संबंधित ज्ञान सुनोगे तब उदय आएगा। हमेशा ज्ञान सुने बगैर कभी भी दर्शन में नहीं आता और जब तक दर्शन में नहीं आए, तब तक 'रोंग बिलीफ' नहीं टूटती।

यह ज्ञान तो बहुत अच्छा है, लेकिन अब उस चेतक को मज़बूत कर लेना है। जब लगे कि विषय में सुख है, तो वहाँ पर 'चेतक' बैठाने की ज़रूरत है। विषय का आराधन तो इस तरह से होना चाहिए कि जैसे पुलिस वाला ज़बरदस्ती करवा रहा हो। यह चेतक हमने आप में बैठा दिया है। लेकिन इस चेतक को इतना मज़बूत कर लेना है कि पुलिस वाले का भी विरोध करे। लेकिन यदि आप उस चेतक की नहीं सुनोगे तो चेतक निर्माल्य हो जाएगा। आप उस चेतक का सम्मान करोगे, उसे खुराक दोगे तो उसे पुष्टि मिलेगी। आप उस चेतक के ज्ञाता-द्रष्टा हो और चेतक वह 'चंदूभाई' को चेत, चेत करके चेतावनी देता रहेगा। 'चंदूभाई' चेतक की सुनते हैं या नहीं, वह आपको देखना है।

सुख की 'बिलीफ' तो स्वरूप में ही रहनी चाहिए। विषय में सुख है, ऐसा 'बिलीफ' में रहना ही नहीं चाहिए। वह तो, केवलदर्शन की तरह स्वरूप में ही सुख है, ऐसा 'बिलीफ' में रहना चाहिए। इस तरह यदि चेतक मज़बूत कर लिया तो फिर हर्ज नहीं।

हमें नया संसार खड़ा नहीं करना है। अब मोक्ष में ही जाना है, जैसे-तैसे करके। नफा-नुकसान के सभी खातों का निपटारा करके, लेना खारिज करके भी हल ला देना है।

यह वास्तव में मोक्ष का मार्ग है। किसी काल में कोई नाम तक नहीं दे, ऐसा यह ज्ञान दिया है, लेकिन यदि आप जान-बूझकर उल्टा करोगे तो फिर बिगड़ेगा। फिर भी कुछ समय में तो हल ला ही लेगा। अत: एकबार यह जो प्राप्त हो गया है, इसे छोड़ने जैसा नहीं है।

जय सच्चिदानंद

चार्ज-डिस्चार्ज की भेदरेखा

अपना यह विज्ञान ऐसा है कि काम कर दे! लेकिन यदि उसके प्रति सिन्सियर रहे और हमारे कहे अनुसार रहे तो विषय की निवृत्ति हो जाए, वर्ना विषय का स्वभाव ही ऐसा है कि यदि एक ही बार विषय भोग किया हो तो वह व्यक्ति तीन दिनों तक किसी भी प्रकार का ध्यान नहीं कर सकता! एक ही बार के विषय से तीन दिनों तक किसी भी प्रकार से ध्यान नहीं हो पाता, ध्यान हो ही नहीं पाता न! स्थिर ही नहीं हो पाता न! फिर इन्सान क्या करे? कितना करे? इसीलिए ये जैन आचार्य त्याग लेकर बैठे हैं न! यह वीतरागों का धर्म विलासियों का धर्म नहीं है! विषय हो तो समझ से छूट जाना चाहिए। विषय अच्छा कैसे लगता है? मुझे तो यही आश्चर्य होता है! विषय पसंद है, उसका मतलब यही है कि समझ ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : विषय-कषाय की जलन होती है न?

दादाश्री : जलन तो लाखों मन भारी हो सकती है। उससे मतलब नहीं है। जलन तो *पुद्गल* को होती है।

प्रश्नकर्ता : विषय-कषाय की जलन का वर्णन, मरण से भी ज़्यादा कहा गया है। यानी उसके बजाय मनुष्य मरना पसंद करेगा।

दादाश्री : नहीं। उसने तो मृत्यु की क़ीमत ही नहीं रखी। उसने तो अनंत जन्मों से यही किया है, पाशवता ही की है, अन्य कुछ भी नहीं किया। लेकिन मृत्यु तो बेहतर है। मृत्यु तो स्वाभाविक चीज़ है और यह तो विभाविक चीज़ है। समझदार को विषय शोभा नहीं देता। एक ओर लाख रुपये मिल रहे हों और उसके सामने विषय का संयोग हो तो लाख को जाने दे, लेकिन विषय का सेवन नहीं करे। विषय ही संसार का मूल कारण है, जगत् का कॉज़ यही है न? हमने तो यह विषय की छूट इसलिए दे रखी है कि नहीं तो इस मार्ग को कोई प्राप्त ही नहीं कर पाता। इसलिए हमने यह अक्रम विज्ञान डिस्चार्ज और चार्ज के रूप में समझाया है। यह विषय डिस्चार्ज है, ऐसा समझने की शक्ति नहीं है न सभी में? इनका सामर्थ्य क्या? वर्ना हमारा जो शब्द है न, 'डिस्चार्ज', यह विषय डिस्चार्ज स्वरूप ही है। लेकिन यह बात समझने का उतना सामर्थ्य ही नहीं है न? क्योंकि ये सब रात-दिन विषय की जलनवाले हैं। वर्ना यह चार्ज और डिस्चार्ज हमने जो रखा है वह एक्ज़ेक्टली वैसा ही है। यह तो बहुत ऊँचा मार्ग बताया है, वर्ना इनमें से कोई धर्म प्राप्त कर ही नहीं पाता न? ये बीवी-बच्चोंवाले धर्म कैसे प्राप्त कर पाते?

प्रश्नकर्ता : कई लोग ऐसा समझते हैं कि 'अक्रम' में ब्रह्मचर्य का कोई महत्व ही नहीं है। वह तो डिस्चार्ज ही है न!

दादाश्री : अक्रम का अर्थ ऐसा है ही नहीं। ऐसा अर्थ करनेवाला 'अक्रम मार्ग' को समझा ही नहीं है। यदि समझा होता तो मुझे उसे विषय के संबंध में फिर से कहना ही नहीं पड़ता। अक्रम मार्ग यानी क्या कि डिस्चार्ज को डिस्चार्ज माना जाता है। लेकिन इन लोगों के लिए डिस्चार्ज है ही नहीं। यह तो, अभी लालच है अंदर! ये सब तो राज़ी-खुशी से करते हैं। डिस्चार्ज को किसी ने समझा है? वर्ना हमने जो मार्ग दिया है, उसमें फिर ब्रह्मचर्य के संबंधित कुछ कहने को रहता ही नहीं! यह तो, खुद की भाषा में मनचाहा अर्थ करेंगे बाद में!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

राजकोट

9-10 फरवरी (शुक्र-शनि) शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग**

11 फरवरी (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : ग्रीनलेन्ड़ चोकडी के पास, मोरबी रोड़, राजकोट. **संपर्क :** 9909977440

भावनगर त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में... दिनांक 16 से 18 फरवरी 2024

16 फरवरी (शुक्र) शाम 7 से 10 - **सत्संग**

17 फरवरी (शनि) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि** (नए मुमुक्षुओं के लिए)

18 फरवरी (रवि) सुबह 10 से 12-30 - **प्राणप्रतिष्ठा** और शाम 4-30 से 7-30 - **प्रक्षाल-पूजन-आरती**

स्थल : 'त्रिमंदिर', रंगोली पार्क के पास, भावनगर-राजकोट हाईवे, वरतेज, भावनगर. **संपर्क :** 9924344425

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी. जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी.

अडालज - दादानगर

16 मार्च (शनि) शाम 5 से 7 - **सत्संग** और **17 मार्च** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

19 मार्च (मंगल) - **पूज्य नीरुमाँ की 18वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) (नया कार्यक्रम)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और 11-30 से 12 शनि-रवि (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)
- **'धर्म संदेश'** चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

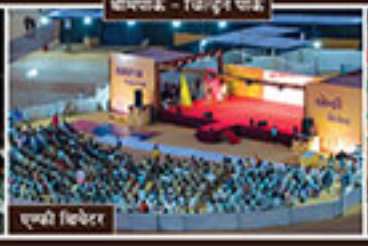

परम पूज्य दादा भगवान का 116वाँ जन्म जयंति महोत्सव : अमरेली : ता. 22 से 26 नवम्बर 2023

ज्ञानविधि

थीमपार्क - चिल्ड्रन पार्क

एम्फी थियेटर

जन्म जयंती स्थान का एरियल व्यू

जन्म जयंति का दिन

दर्शन

जनवरी 2024
वर्ष-19 अंक-3
अखंड क्रमांक - 219

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

अक्रम विज्ञान ने दी छूट, कौन सी शर्त पर?

दुनिया ने जो देखा होगा, मैंने उससे कुछ नये ही तरह का देखा है और तभी मैं ऐसी आज्ञा दे सकता हूँ, वर्ना देता ही नहीं न। यह तो जोखिमदारी है। मैंने ऐसा विज्ञान देखा है, तभी मैंने आपको छूट दी है, वर्ना छूट नहीं दी जा सकती। मैंने आपको किस तरह की छूट दी है? हमने हक के विषय की छूट दी है, ताकि फिर बाहर दृष्टि नहीं बिगड़े और अगर बिगड़ गई हो तो सुधार लेना। लेकिन हक की जगह का एक ही स्थान तय हो गया इसलिए फिर आपको 'अलाउ' (अनुमति) करते हैं। लेकिन यह क्या सिर्फ आत्मसुख है या दूसरा कोई सुख है? इतना जानने के लिए आपसे कहते हैं कि छः महीनों के लिए विषय छोड़कर तो देखो! सिर्फ पता लगाने के लिए ही, कि यह सुख आत्मा में से आया या विषय में से आया?

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.